

Sieben gegen Theben

Prologos

- [1] [Ἔτεοκλής]: Κάδμου πολὶται, χρὴ λέγειν τὰ καίρια
- [2] ὅστις φυλάσσει πρᾶγος ἐν πρύμνῃ πόλεως
- [3] οἷα κα νωμῶν, βλέφαρα μὴ κοιμῶν ὕπνῳ.
- [4] εἰ μὲν γὰρ εὖ πράξαι μεν, αἰτία θεοῦ.
- [5] εἰ δ' αὖθ', ὃ μὴ γένοιτο, συμφορὰ τύχοι,
- [6] ἔτεο κλέης ἄν εἷς πολὺς κατὰ πτόλιν
- [7] ὕμνοϊθ' ὑπ' ἄστων φοροίμιοις πολυρόθοις
- [8] οἰμῶν μασίνθ', ὦν Ζεὺς ἄλεξητήριος
- [9] ἐπὶ νυμῶς γένοιτο καὶ δμείων πόλει.
- [10] ὕμᾱς δὲ χρὴ νῦν, καὶ τὸν ἐλλείποντ' ἔτι
- [11] ἥβης ἀκμαίᾱς καὶ τὸν ἔξηβον χρόνῳ,
- [12] βλαστημὸν ἀλδαίνοντα σῶματος πολύν,
- [13] ὥραν τ' ἔχονθ' ἔκαστον ὥστε συμπρεπές,
- [14] πόλει τ' ἀρήγειν καὶ θεῶν ἐγχωρίων
- [15] βωμοῖσι, τιμὰς μὴ ἔξαλειφθῆναι ποτε.
- [16] τέκνοις τε, Γῇ τε μητρὶ, φιλότατ' τροφῷ.
- [17] ἢ γὰρ νέους ἔρποντας εὐμενεῖ πέδῳ,
- [18] ἅπαντα πανδοκοῦσσαι δείας ὄτλον,
- [19] ἐθρέψατ' οἱ κητῆρας ἀσπίδων φόρους
- [20] πιστοὺς ὅπως γένοιτο σθεπρὸς χρέος τόδε.

- [21] καὶ νῦν | μὲν ἐς | τόδ' ἢ | μαρ εὔ | ῥέπει | θεός·
- [22] χρόνον | γὰρ ἢ | δὴ τόν | δε πυρ | γηρου | μένοις |
- [23] καλῶς | τὰ πλεί | ω πόλε | μος ἐκ | θεῶν | κυρεῖ·
- [24] νῦν δ' ὥς | ὁ μάν | τις φη | σὶν, οἱ | ωνῶν | βοτήρ,
- [25] ἐν ὧ | σὶ νω | μῶν καὶ | φρεσίν, | πυρὸς | δίχα,
- [26] χρηστή | ρίους | ὄρνι | θας ἀ | ψευδεῖ | τέχνη·
- [27] οὗτος | τοιῶν | δεδε | σπότης | μαντευ | μάτων |
- [28] λέγει | μεγί | στην | προ | σβολὴν | Ἀχαι | ἶδα |
- [29] νυκτὴ | γορεῖ | σθαϊκὰ | πιβου | λεύσειν | πόλει·
- [30] ἀλλ' ἔς | τ' ἐπάλ | ξεις καὶ | πύλας | πυργω | μάτων |
- [31] ὁρμᾷ | σθε πάν | τες, σοῦ | σθε σὺν | παντευ | χίᾳ, |
- [32] πληροῦ | τε θω | ρακεῖ | α, καὶ | πὶ σέλ | μασιν |
- [33] πύργων | στάθη | τε, καὶ | πυλῶν | ἐπ' ἐ | ξόδοις |
- [34] μίμνον | τες εὔ | θαρσεῖ | τε, μὴ δ' | ἐπη | λύδων |
- [35] ταρβεῖτ' | ἄγαν | ὄμι | λον· εὔ | τελεῖ | θεός·
- [36] σκοποὺς | δὲ κά | γῶ καὶ | κατο | πτηῆρας | στρατοῦ |
- [37] ἔπεμ | ψα, τοὺς | πέποι | θαμὴ | ματᾶν | ὀδῶ·
- [38] καὶ τῶν δ' | ἀκού | σασοῦ | τι μὴ | ληφθῶ | δόλῳ·
- [39] Ἄγγελος: Ἐτεό | κλεες, | φέρι | στε καὶ | δμείων | ἄναξ,
- [40] ἦκω | σαφῆ | τὰ κεῖ | θεν ἐκ | στρατοῦ | φέρων,
- [41] αὐτὸς | κατό | πτης δ' | εἴμ' | ἐγὼ | τῶν πραγ | μάτων·
- [42] ἄνδρες | γὰρ ἐ | πτά, | θοῦ | ριοι | λοχα | γέται,
- [43] ταυρο | σφαγοῦν | τες ἐς | μελάν | δετον | σάκος |

- [44] καὶ θιγ|γάνον|τες|χερ|σὶ ταυ|ρείου|φόνου|
- [45] Ἄρη|τ', Ἐνυ|ώ, καὶ|φιλαί|ματον|Φόβον|
- [46] ὠρκω|μότη|σανῇ|πόλει|κατα|σκαφᾶς|
- [47] θέντες|λαπά|ξινᾶ|στυ Καδ|μείων|βίᾱ|
- [48] ἦ γῆν|θανόν|τες|τήν|δε φυ|ράσειν|φόνω·|
- [49] μνημεῖ|ἀ θ' αὐ|τῶν τοῖς|τεκοῦ|σινές|δόμους|
- [50] πρὸς ἄρμ'|Ἀδρά|στου|χερ|σὶν ἔ|στεφον,|δάκρυ|
- [51] λείβον|τες· οἷ|κτος δ' οὐ|τις ἦν|διὰ|στόμα·|
- [52] σιδη|ρόφρων|γὰρ θυ|μὸς ἀν|δρείᾱ|φλέγων|
- [53] ἔπνει,|λεόν|τωνώς|Ἄρη|δεδορ|κότων·|
- [54] καὶ τῶν|δε πύ|στις οὐκ|ᾔκνω|χρονί|ζεται·|
- [55] κληρου|μένους|δ' ἔλει|πον, ὡς|πάλω|λαχῶν|
- [56] ἔκα|στος αὐ|τῶν πρὸς|πύλας|ἄγοι|λόχον·|
- [57] πρὸς ταῦτ'|ἀρί|στους ἄν|δρας ἐκ|κρίτους|πόλεως|
- [58] πυλῶν|ἐπ' ἔ|ξόδοι|σιτά|γευσαι|τάχος·|
- [59] ἐγγὺς|γὰρ ἦ|δη πάνο|πλος Ἄρ|γεῖων|στρατὸς|
- [60] χωρεῖ,|κονί|ει, πεδί|α δ' ἄρ|γηστής|ἄφρὸς|
- [61] χραίνει|σταλαγ|μοῖσι|πικῶν|ἐκ πλευ|μόνων·|
- [62] σὺ δ' ὥ|στε να|ὸς κεδ|νὸς οἱ|ακο|στρόφος|
- [63] φράξαι|πόλι|σμα, πρὶν|κατα|γίσαι|πνοᾶς|
- [64] Ἄρεως·|βοᾷ|γὰρ κύ|μα χερ|σαῖον|στρατοῦ·|
- [65] καὶ τῶν|δε και|ρὸν ὅ|στις ὥ|κιστος|λαβέ·|
- [66] κάγῳ|τὰ λοι|πὰ πι|στὸν ἢ|μερο|σκόπον|

[67] ὀφθαλ|μὸν ἔ|ξω, καὶ| σαφη|νεῖα|λόγου|

[68] εἰδὼς| τὰ τῶν| θύρα|θενά|βλαβῆς| ἔση·|

[69] [Ἑτεοκλῆς]: ὦ Ζεῦ| τε καὶ| Γῇ καὶ| πολισ|σοῦχοι|θεοί·|

[70] Ἄρά| τ' Ἐρι|νὺς πα|τρὸς ἡ| μεγα|σθενῆς·|

[71] μή μοι| πόλιν| γε πρυ|μνόθεν| πανώ|λεθρον|

[72] ἐκθα|μνίση|τεδη|άλω|τον, Ἐλ|λάδος|

[73] φθόγγον| χέου|σαν, καὶ| δόμους| ἔφε|στίους·|

[74] ἔλευ|θέραν| δὲ γῆν| τε καὶ| Κάδμου| πόλιν|

[75] ζυγοῖ|σι δου|λίοι|σμή|ποτε| σχεθεῖν·|

[76] γένε|σθε δ' ἄλ|κή· ξυ|νὰ δ' ἔλ|πίζω| λέγειν·|

[77] πόλις| γὰρ εὔ| πράσσου|σαδαί|μονας| τίει·|

Parodos

[78] [Χορός]: θρέομαι φοβερά μεγάλ ἄχη|

[79] μεθεῖται στρατός· στρατόπεδον λιπῶν|

[80] ῥεῖ πολὺς ὁδε λεῶς πρόδρομος ἱππότης·|

[81] αἰθερία κόνις με πείθει φανεῖσ',|

[82] ἄναυδος σαφῆς ἔτυμος ἄγγελος·|

[83] ἔτι δὲ γὰρ ἐμᾶς πεδί' ὀπλόκτυπ' ὥτ'ι|

[84] χρίμπτει βοάν· ποτᾶται, βρέμει δ'|

[85] ἀμαχέτου δίκαν ὕδατος ὀροτύπου·|

[86] ἰὼ ἰὼ|

[87] ἰὼ θεοὶ θεαί τ' ὀρόμενον κακὸν|

- [88] βοᾷ τειχέων ὑπερ ἁλεύσατε.
- [89] ὁ λεύκασπις ὄρνυται λαὸς εὐ||τρεπῆς|
- [90] ἐπὶ πόλιν διώκων πόδα.
- [91] τίς ἄρα ρύσεται, τίς ἄρ' ἐπαρκέσει|
- [92] θεῶν ἢ θεᾶν;
- [93] πότερα δῆτ' ἐγὼ πάτρια ποτιπέσω|
- [95] βρέτη δαιμόνων;
- [96] ἰὼ μάκαρες εὐεδροι,
- [97] ἀκμάζει βρετέων ἔχεσθαι· τί μέλ||λομεν|
- [98] ἀγᾶστονοι;
- [100] ἀκού|ετ' ἡοῦκ| ἀκού|ετ' ἅ|σπίδων| κτύπον;
- [101] πέπλων καὶ στεφάνων πότ' εἰ μὴ νῦν ἀμ||φί|
- [102] λιτάν' ἔξομεν;
- [103] κτύπον| δέδορ|κα-πάτα| γος οὐχ| ἐνὸς| δορός.
- [104] τί ῥέξεις; προδώσεις, παλαίχθων|
- [105] Ἄρης, τὰν τεάν;
- [106] ὦ χρυ|σοπή|ληξδαῖ|μον ἔπιδ' ἔπιδε| πόλιν|
- [107] ἄν ποτ' εὐφιλήταν ἔθου.

Strophe 1

- [109] [Χορός]: θεοὶ πολιάοχοι πάντες ἴτε χθονὸς·
- [110] ἴδετε παρθένων|
- [111] ἰκέσιον λόχον δουλοσύνας ὑπερ.

[112] κῦμα περὶ πτόλιν δοχμολόφων ἀνδρῶν|
 [115] καχλάζει πνοαῖς Ἄρεος ὀρόμενον.|
 [116] ἀλλ', ὦ Ζεῦ πάτερ παντὸς ἔχων τέλος,|
 [117] πάντως ἄρηξον δαίμων ἄλυσιν.|
 [120] Ἀργεῖοι δὲ πόλισμα Κάδμου|
 [121] κυκλοῦνται· φόβος δ' ἀρήων ὅπλων|
 [122] δονεῖ, διὰ δέ τοι γενύων ἱππίων|
 [123] μινύρονται φόνον χαλινοί.|
 [124] ἑπτὰ δ' ἀγάνορες πρέποντες στρατοῦ|
 [125] δορυσσοῖς σαγαῖς πύλαις ἐβδόμαις|
 [126] [Zele ost]
 [127] προσίστανται πάλω λαχόντες.

Antistrophe 1

[128] [Χορός]: σύ τ', ὦ Διογενὲς φιλόμαχον κράτος,|
 [129] ῥυσίπολις γενοῦ,|
 [130] Παλλάς, ὃ θ' ἵππιος ποντομέδων ἄναξ|
 [131] ἰχθυβόλῳ Ποσειδάων μαχανᾷ,|
 [132] ἐπίλυσιν φόβων, ἐπίλυσιν δίδου.|
 [135] σύ τ', Ἄρης, φεῦ, φεῦ, πόλιν ἐπώνυμον|
 [136] Κάδμου φύλαξον κήδεσαί τ' ἐναργῶς.|
 [140] καὶ Κύπρις, ἅτε γένους προμάτῳ,|
 [141] ἄλευσον· σέθεν γὰρ ἐξ αἵματος|
 [142] γεγόναμεν· λιταῖσί σε θεοκλύτοις|

- [143] αὐτοῦσαι πελαζόμεσθα.
- [145] καὶ σύ, Λύκει' ἄναξ, Λύκειος γενοῦ
- [146] στρατῷ δαΐῳ στόνων ἀντίτας.
- [147] σύ τ', ὦ Λατογένει||α
- [148] κούρα, τόξον εὐτυκάζου.

Strophe 2

- [149] [Χορός]: ἔ ἔ ἔ ἔ,
- [150] ὄτοβον ἀρμάτων ἀμφὶ πόλιν κλύω.
- [151] ὦ πότνι' Ἥρα.
- [152] ἔλακον ἀξόνων βριθομένων χνόαι.
- [153] Ἄρτεμι φίλα,
- [155] δοριτίνακτος αἰθὴρ δ' ἐπιμαίνεται.
- [156] τί πόλις ἄμμι πάσχει, τί γενήσεται;
- [157] ποῖ δ' ἔτι | τέλος ἐ|πάγει |θεός;

Antistrophe 2

- [158] [Χορός]: ἔ ἔ ἔ ἔ,
- [158b] ἀκροβόλων δ' ἐπάλξεων λιθαῖς ἔρχεται.
- [159] ὦ φίλ' Ἀπολλων.
- [160] κónαβος ἐν πύλαις χαλκοδέτων σακέων,
- [161] παῖ Διός, ὄθεν
- [162] πολεμόκραντον ἀγνὸν τέλος ἐν μάχῃ.
- [163] σύ τε, μάκαιρ' ἄνασσ' Ὅγκᾱ, πρὸ πόλεως

[165] ἐπτά|λυ|λον ἔ|δο|ς ἐ|πι|ρύ|ου.

Strophe 3

[166] [Χορός]: ἰὼ πανα|ρκεῖς θεοί,

[167] ἰὼ τέ|λειοι τέ|λειαί τε γᾶς|

[168] τᾶ|σδε πυρ|γοφύ|λακες,

[169] πόλιν δο|ρίπονον μὴ προ|δῶθ' |

[170] ἑτερο|φώνω στρατῶ.

[171] κλύετε παρ|θένων κλύετε παν|δίκως|

[172] χειρο|τόνους λιτάς.

Antistrophe 3

[174] [Χορός]: ἰὼ φίλοι δαίμονες,

[175] λυτήριόι τ' ἀμ|φιβάν|τες πόλιν,

[176] δεῖ|ξαθ' ὥς φιλο|πόλεις,

[177] μέλεσθέ θ' ἱερῶν δημί|ων,

[178] μελό|μενοις τ' ἄλ|ξατε.

[179] φιλο|θύτων δέ τοι πό|λεος ὀργί|ων

[180] μνή|στορες ἐστέ μοι.

[181] [Ἐτεοκλής]: ὑμᾶς ἐ|ρω τῶ, θρέμ|ματ' οὐκ ἀνα|σχετά,

[182] ἧ ταῦτ' ἄρι|στα καὶ πόλιν|σωτή|ρια,

[183] στρατῶ τε θάρ|σος τῶ δε πυρ|γηρου μέν|ω,

[185] βρέτη πε|σοῦ|σας πρὸς πολί|σιν, σού|χων θεῶν|

[186] αὔειν, λακά|ζειν, σωφρο|νῶν μισή|ματα;

- [187] μήτ' ἐν | κακοῖσι | σμήτ' | ἐν εὐ- | εστοῖ | φίλῃ |
- [188] ξύνοι | κος εἶ | ῃν τῷ | γυναι | κείῳ | γένει |
- [189] κρατοῦ | σα μὲν | γὰρ οὐχ | ὁμι | λητὸν | θράσος |
- [190] δείσα | σα δ' οἴ | κω καὶ | πόλει | πλέον | κακόν |
- [191] καὶ νῦν | πολί | ταις τὰς | δε δια | δρόμους | φυγὰς |
- [192] θεῖσαι | διερ | ροθή | σα τᾶ | ψυχον | κάκην |
- [193] τὰ τῶν | θύρα | θενδ' ὡς | ἄριστ' | ὀφέλ | λεται |
- [194] αὐτοὶ | δ' ὑπ' αὐ | τῶν ἐν | δοθεν | πορθοῦ | μεθα |
- [195] τοιαῦ | τά τᾶν | γυναι | ξισυν | ναίων | ἔχοις |
- [196] κεί μή | τις ἀρ | χῆς τῆς | ἐμῆς | ἀκού | σεται |
- [197] ἄνῃρ | γυνή | τε χῶ | τι τῶν | μεταί | χμιον |
- [198] ψῆφος | κατ' αὐ | τῶν ὅλε | θρία | βουλεύ | σεται |
- [199] λευστή | ρα δή | μου δ' οὐ | τι μὴ | φύγη | μόρον |
- [200] μέλει | γὰρ ἀν | δρί, μὴ | γυνή | βουλεu | έτω |
- [201] τᾶξω | θεν· ἐν | δον δ' οὐ | σα μὴ | βλάβην | τίθει |
- [202] ἦκου | σας ἦοὺκ | ἦκου | σας, ἦ | κωφῇ | λέγω |
- [203] [Χορός]: ὦ φίλον Οἰδίπου τέκος, ἔδεις' ἀκούσασα |
- [204] τὸν ἄρματόκτυπον ὄτοβον ὄτοβον, |
- [205] ὅτε τε σύριγγες ἔκλαγξαν ἐλίτροχοι, |
- [206] ἵππικῶν τ' ἀπύαν πηδαλίων διὰ στόμα |
- [207] πυριγενετᾶν χαλινῶν. |
- [208] [Ἐτεοκλής]: τί οὖν; | ὁ ναύ | της ἄ | ρα μὴ' ς | πρῶραν | φυγῶν |
- [209] πρύμνη | θεν ἡῶ | ρε μη | χανὴν | σωτη | ρίας |

- [210] νεῶς | καμού | σηςπον | τίω | πρὸς κύ | ματι;
- [211] [Χορός]: ἀλλ' ἐπὶ δαιμόνων πρόδρομος ἦλθον ἀρ||χαῖα
- [212] βρέτη, θεοῖσι πίσυνος, νιφάδος
- [213] ὅτ' ὀλοᾷς νειφομένας βρόμος ἐν πύλαις.
- [214] δὴ τότε ἦρθεν φόβῳ πρὸς μακάρων λιτάς, πόλεως
- [215] ἵν' ὑπερέχοιεν ἀλκάν.
- [216] [Ἑτεοκλής]: πύργον | στέγειν | εὐχε | σθεπολέ | μιον | δόρυ.
- [217] οὐκοῦν | τάδ' ἔ | σται πρὸς | θεῶν· | ἀλλ' οὖν | θεοῦς
- [218] τοὺς τῆς | ἀλού | σηςπόλε | ος ἐ | κλείπειν | λόγος.
- [219] [Χορός]: μήποτ' ἐμὸν κατ' αἰῶνα λίποι θεῶν
- [220] ἄδε πανάγυρις, μηδ' ἐπίδοιμι τάνδ'
- [221] ἀστυδρομουμέναν πόλιν καὶ στράτευμ'
- [222] ἀπτόμενον πυρὶ δαίω.
- [223] [Ἑτεοκλής]: μή μοι | θεοῦς | καλοῦ | σαβου | λεύου | κακῶς.
- [224] πειθαρχία | γάρ ἐ | στί τῆς | εὐπρα | ξίας
- [225] μήτηρ, | γυνή | σωτῆ | ρος· ὧδ' | ἔχει | λόγος.
- [226] [Χορός]: ἔστι· θεοῦ δ' ἔτ' ἰσχύς καθυπερτέρα·
- [227] πολλάκι δ' ἐν κακοῖσι τὸν ἀμάχανον
- [228] κάκ χαλεπᾶς δύας ὑπερθ' ὀμμάτων
- [229] κρημναμενᾶν νεφελᾶν ὀρθοῖ.
- [230] [Ἑτεοκλής]: ἀνδρῶν | τάδ' ἔ | στί, σφάγι | α καὶ | χρηστή | ρια
- [231] θεοῖ | σιν ἔρ | δειν πολε | μίων | πειρω | μένους.
- [232] σὸν δ' αὖ | τὸ σι | γᾶν καὶ | μένειν | εἴσω | δόμων.

[233] [Χορός]: διὰ θεῶν πόλιν νεμόμεθ' ἀδάματον,

[234] δυσμενέων δ' ὄχλον πύργος ἀποστέγει.

[235] [Χορός]: τίς τάδε νέμεσις στυγεῖ;

[236] [Ἑτεοκλής]: οὔτοι φθονῶ σοι δαιμόνων τιμᾶν γένος.

[237] ἀλλ' ὥς πολίτας μὴ κακοσπλάγχχνους τιθῆς,

[238] εὔκηλος ἴσθι μηδ' ἄγαν ὑπερφοβοῦ.

[239] [Χορός]: ποτίφατον κλύουσα πάταγον ἀνάμιγα

[240] тарβосύνω φόβω τάνδ' ἐς ἀκρόπτολιν,

[241] τίμιον ἔδος, ἰκόμαν.

[242] [Ἑτεοκλής]: μή νυν, ἔαν θνήσκον ταςῇ τετρωμένους

[243] πύθησθε, κωκυτοῖσιν ἄρπαλί ζετε.

[244] τούτῳ γὰρ Ἄρης βόσκεται, φόνῳ βροτῶν.

[245] [Χορός]: καὶ μὴν ἀκούω γ' ἱππικῶν φρυγμάτων.

[246] [Ἑτεοκλής]: μή νυν ἀκούουσ' ἐμφανῶς ἄκου' ἄγαν.

[247] [Χορός]: στένει πόλις μαγῇ θεν, ὥς κυκλουμένων.

[248] [Ἑτεοκλής]: οὐκοῦν ἔμ' ἄρκεϊ τῶνδε βουλεύειν πέρι.

[249] [Χορός]: δέδοικ', ἀρα γὰρ μὸς δ' ἐν πύλαις ὀφέλλεται.

[250] [Ἑτεοκλής]: οὐ σίγα μὴ δὲν τῶνδ' ἐρεῖς κατὰ πτόλιν;

[251] [Χορός]: ὦ ξυντέλει, ἀμὴ προδοῶς πυργώματα.

[252] [Ἑτεοκλής]: οὐκ ἐς φθόρον σιγῶς ἄνασχῆσθι τάδε;

[253] [Χορός]: θεοὶ πολίται, μὴ με δουλείας τυχεῖν.

[254] [Ἑτεοκλής]: αὐτὴ σὺ δουλοῖς καὶ με καὶ πᾶσαν πόλιν.

[255] [Χορός]: ὦ παγκρατὲς Ζεῦ, τρέψον εἰς ἐχθροὺς βέλος.

[256] [Ἑτεοκλής]: ὦ Ζεῦ, γυναικῶνοῖον ὦ πασας γένος.

[257] [Χορός]: μοχθηρόν, ὦ σπερ ἄνδρας ὦν ἀλῶ πόλιν.

[258] [Ἑτεοκλής]: παλιν στομεῖς αὖθιγ γάνουσ' ἀγαλμάτων;

[259] [Χορός]: ἄψυχία γὰρ γλῶσσαν ἄρπάζει φόβος.

[260] [Ἑτεοκλής]: αἵτου μένω μοι κοῦφον εἰδοίης τέλος.

[261] [Χορός]: λέγοις ἄν ὥς τάχιστα, καὶ τάχ' εἴσομαι.

[262] [Ἑτεοκλής]: σίγησον, ὦ τάλαινα, μὴ φίλους φόβει.

[263] [Χορός]: σιγῶ· σὺν ἅλλοις πείσομαι τὸ μόρσιμον.

[264] [Ἑτεοκλής]: τοῦτ' ἄντ' ἐκείνων τοῦ πρὸς αἰροῦμαι σέθεν.

[265] καὶ πρὸς γε τοῦτοίς, ἐκτὸς οὓς' ἀγαλμάτων,

[266] εὖχου τὰ κρείσσω, ξυμμάχους εἶναι θεούς.

[267] κάμῶν ἀκούσας' εὐγμάτων, ἔπειτα σὺ

[268] ὀλοὺν μὲν ἱερὸν εὐμενῆ παιῶνισον,

[269] Ἑλληνικὸν νόμισμα θυστάδος βοῆς,

[270] θάρσος φίλοις, λύουσα πολέμιον φόβον.

[271] ἐγὼ δὲ χώρας τοῖς πολισσοῦχοις θεοῖς,

[272] πεδινόμοις τε καὶ γορᾶς ἐπισκόποις,

[273] Δίρκης τε πηγαῖς, ὕδατί τ' ἰσμηνοῦ λέγω

[274] εὖ ξυντυχόντων καὶ πόλεως σεσωμένης,

[275] μήλοισιν αἰμάσσονταξέστιας θεῶν,

[276] [ταυροκτονοῦντα]ς θεοῖσιν, ὧδ' ἐπεύχομαι]

[277] θύσειν τροπαῖα, δαΐων δ' ἐσθήματα,

[278] στέψω λάφυρα δουρίπληχθ' ἄγνοϊς δόμοις.

[279] στέψω | πρὸ ναῶν, πολέμιν | δ' τὰ ἐσθήματα |

[280] τοιαῦτ' | ἐπεύχουμῃ | φιλοστόνως | θεοῖς, |

[281] μηδ' ἐν | ματαίοις κἀγρίοις | ποιφύγμασιν· |

[282] οὐ γάρ | τι μάλλον μὴ | φύγῃς | τὸ μόρσιμον. |

[283] ἐγὼ | δέ γ' ἄνδρας ἔξ | ἐμοὶ | σὺν ἐβδόμῳ |

[284] ἀντηρέτας | ἐχθροῖσι τὸν | μέγαν | τρόπον |

[285] εἰς ἐπτατεῖ | χεῖρ' ἐξόδους | τάξω | μολών, |

[286] πρὶν ἄγγέλους | σπερχynoύς | τε καὶ | ταχυρόθους |

[287] λόγους | ἰκέσθαι καὶ | φλέγειν | χρεῖας | ὕπο.

Stasimon

Strophe 1

[288] [Χορός]: μέλει, φόβῳ δ' οὐχ ὑπνώσσει κέαρ· |

[289] γείτονες δὲ καρδίας |

[290] μέριμναι ζωπυροῦσι τάρβος |

[291] τὸν ἀμφιτειχῇ λεών, |

[292] δράκοντας ὥς τις τέκνων |

[293] ὑπερδέδοικεν λεχαίων δυσεινάτορας |

[294] πάντρομος πελειάς. |

[295] τοὶ μὲν γὰρ ποτὶ πύργους |

[296] πανδαμεῖ πανομιλεῖ |

[297] στείχουσιν. τί γένωμαι; |

[298] τοὶ δ' ἐπ' ἀμφιβόλοισιν |

[299] ἰάπτουσι πολίταις|

[300] χερμάδ' ὀκριόεσσαν.|

[301] παντὶ τρόπῳ, Διογενεῖς|

[302] θεοί, πόλιν καὶ στρατὸν|

[303] Καδμογενῇ ῥύεσθε.|

Antistrophe 1

[304] [Χορός]: ποῖον δ' ἀμείψεσθε γαίᾳς πέδον|

[305] τᾶσδ' ἄρειον, ἐχθροῖς|

[306] ἀφέντες τὰν βαθύχθον' αἶαν,|

[307] ὕδωρ τε Διρκαῖον, εὐ||τραφέστατον|

[308] πωμάτων|

[309] ὄσων ἴησιν Ποσειδᾶν ὁ γαῖαρχος|

[311] Τηθύος τε παῖδες.|

[312] πρὸς τὰδ', ὦ πολιοῦχοι|

[313] θεοί, τοῖσι μὲν ἔξω|

[314] πύργων ἀνδρολέτειραν|

[315] κῆρα, ῥίψοπλον ἄταν,|

[316] ἐμβалόντες ἄροισθε|

[317] κῦδος τοῖσδε πολίταις.|

[318] καὶ πόλεως ῥύτορες ἔστ
seid
it|is

[319] εὐεδροί τε στάθητ'|

[320] ὀξυγόοις λιταῖσιν.|

Strophe 2

- [321]

[Χορός]: οἰκτρὸν γὰρ πόλιν ὦδ' ὠγυγίαν
- [322]

Ἄϊδα προΐάψαι, δορὸς ἄγραν
- [323]

δουλίαν ψαφάρῃ σποδῶ
- [324]

ὕπ' ἀνδρὸς Ἀχαιοῦ θεόθεν
- [325]

περθομέναν ἀτίμως,
- [326]

τὰς δὲ κεχειρωμένας ἄγεσθαι,
- [327]

ἔ ξ, νέας τε καὶ παλαιάς
- [328]

ἵππηδὸν πλοκάμων, περιρῥηγνυμένων
- [329]

φαρέων. βοᾷ
- [330]

δ' ἐκκενουμένα πόλιν,
- [331]

λαΐδος ὀλλυμένας μιξοθρόου·
- [332]

βαρείας τοι τύχας προταρβῶ.

Antistrophe 2

- [333]

[Χορός]: κλαυτὸν δ' ἄρτιτρόποις ὠμοδρόποις
- [334]

νομίμων προπάροιθεν διαμεΐψαι
- [335]

δωμάτων στυγεράν ὁδόν·
- [336]

τί; τὸν φθίμενον γὰρ προλέγω
- [337]

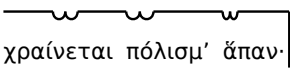
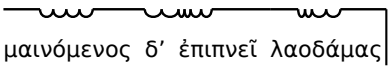
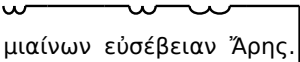
βέλτερα τῶνδε πράσσειν·
- [338]

πολλὰ γάρ, εὔτε πτόλις δαμασθῇ,
- [339]

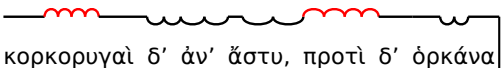
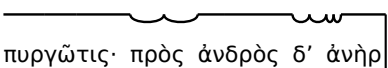
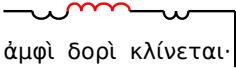
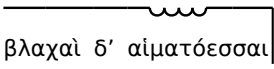
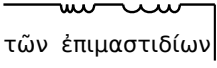
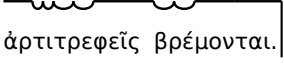
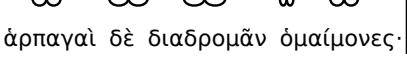
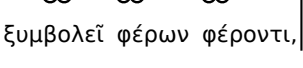
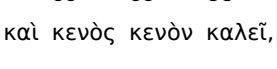
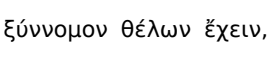
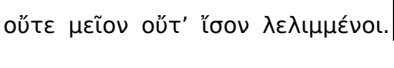
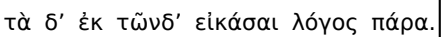
ἔ ξ, δυστυχῇ τε πράσσει.
- [340]

ἄλλος δ' ἄλλον ἄγει, φονεύει,
- [341]

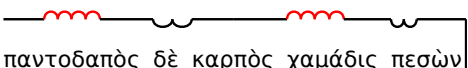
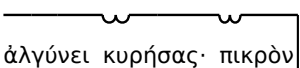
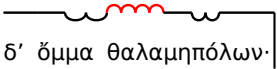
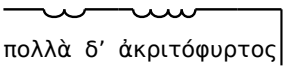
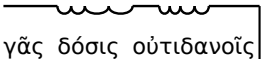
τὰ δὲ πυρφορεῖ· καπνῶ

[342]  χραίνεται πόλισμ' ἅπαν·
[343]  μαινόμενος δ' ἐπιπνεῖ λαοδάμας
[344]  μιάινων εὐσέβειαν Ἄρης·

Strophe 3

[345] [Χορός]:  κορκορυγαὶ δ' ἀν' ἄστρῳ, προτὶ δ' ὀρκάνα
[346]  πυργῶτις· πρὸς ἀνδρὸς δ' ἀνὴρ
[347]  ἀμφὶ δορὶ κλίνεται·
[348]  βλαχαὶ δ' αἱματόεσσαι
[349]  τῶν ἐπιμαστιδίων
[350]  ἀρτιτρεφεῖς βρέμονται·
[351]  ἀρπαγαὶ δὲ διαδρομαῖν ὁμαίμονες·
[352]  ξυμβολεῖ φέρων φέροντι,
[353]  καὶ κενὸς κενὸν καλεῖ,
[354]  ξύννομον θέλων ἔχειν,
[355]  οὔτε μείον οὔτ' ἴσον λελιμμένοι·
[356]  τὰ δ' ἐκ τῶνδ' εἰκάσαι λόγος πάρα·

Antistrophe 3

[357] [Χορός]:  παντοδαπὸς δὲ καρπὸς χαμάδις πεσῶν
[358]  ἀλγύνει κυρήσας· πικρὸν
[359]  δ' ὄμμα θαλαμηπόλων·
[360]  πολλὰ δ' ἀκριτόφυρτος
[361]  γᾶς δόσις οὐτιδανοῖς

- [362] ἐν ῥοθίοις φορεῖται.
- [363] δμῳίδες δὲ καινοπήμονες νέαι.
- [364] τλάμον' εὐνὰν αἰχμάλωτον
- [365] ἀνδρὸς εὐτυχοῦντος ὥς
- [366] δυσμενοῦς ὑπερτέρου
- [367] ἐλπίς ἐστι νύκτερον τέλος μολεῖν,
- [368] παγκλαύτων ἀλγέων ἐπίρροθον.
- [369] [Ἡμιχόριον Α]: ὃ τοι | κατόπτης, ὥς | ἐμοὶ | δοκεῖ, | στρατοῦ
- [370] πευθῶ | τιν' ἢ | μῖν, ὦ | φίλαι, | νέαν | φέρει,
- [371] σπουδῇ | διῶ | κωνοπομπίμους | χνόας | ποδῶν.
- [372] [Ἡμιχόριον Β]: καὶ μὴν | ἄναξ | ὅδ' αὖ | τὸς Οἰδίπου | τόκος |
- [373] εἰς ἄρ | τίκοι | λονάγ | γέλου | λόγον | μαθεῖν.
- [374] σπουδῇ | δὲ καὶ | τοῦδ' οὐκ | ἀπαρ | τίζει | πόδα.
- [375] [Ἄγγελος]: λέγοιμ' | ἄν εἰ | δῶς εὔ | τὰ τῶν | ἑναν | τίων,
- [376] ὥς τ' ἐν | πύλαις | ἔκα | στοσεῖ | ληχεν | πάλον.
- [377] Τυδεὺς | μὲν ἦ | δη πρὸς | πύλαι | σὺπροι | τίσιν
- [378] βρέμει, | πόρον | δ' ἴσμη | νὸν οὐκ | ἔᾱ | περᾶν
- [379] ὁ μάν | τις· οὐ | γὰρ σφάγι | α γί | γνεται | καλά.
- [380] Τυδεὺς | δὲ μαρ | γῶν καὶ | μάχης | λελιμ | μένος
- [381] μεσημ | βριναῖς | κλαγγαῖ | σινῶς | δράκων | βοᾷ.
- [382] θείνει | δ' ὄνει | δει μάν | τιν Οἰ | κλείδην | σοφόν,
- [383] σαίνειν | μόρον | τε καὶ | μάχην | ἄψυ | χίᾱ.
- [384] τοιαῦτ' | αὖ | τῶντρεῖς | κατα | σκίους | λόφους

- [385] σείει, κράνους χαίτωμ', ὑπ' ἅσπιδος δ' ἔσω
- [386] χαλκήλατοι κλάζουσικῶδωνες φόβον·
- [387] ἔχει δ' ὑπέρφρον σῆμ' ἐπ' ἅσπιδος τόδε,
- [388] φλέγονθ' ὑπ' ἅστροις οὐρανὸν τετυγμένον·
- [389] λαμπρὰ δὲ πανσέληνος ἐν μέσῳ σάκει,
- [390] πρέσβιστον ἅστρον, νυκτὸς ὁφθαλμός, πρέπει.
- [391] τοιαῦτ' ἀλύωνταῖς ὑπερκόμποισαγαῖς
- [392] βοᾷ παρ' ὅχθαις ποταμίαις, μάχης ἔρων,
- [393] ἵππος χαλινῶν ὧς κατασθμαίνων μένει,
- [394] ὅστις βοὴν σάλπιγγος ὀρμαίνει μένων.
- [395] τίν' ἂν τιτάξει τῷδε; τίς Προΐτου πυλῶν
- [396] κλήθρων λυθέντων προστατεῖν φερέγγυος;
- [397] [Ἐτεοκλής]: κόσμον μὲν ἂν δρὸς οὐτίν' ἂν τρέσαιμ' ἐγώ,
- [398] οὐδ' ἐλκοποι ἀγίγνεται τὰ σήματα·
- [399] λόφοι δὲ κῶδων τ' οὐ δάκνουσ' ἄνευ δορός.
- [400] καὶ νύκτα ταύτην ἦν λέγεις ἐπ' ἅσπιδος
- [401] ἄστροισι μαρμαίρουσαν οὐρανοῦ κυρεῖν,
- [402] τάχ' ἂν γένοιτο μάντις ἀνοία τινί.
- [403] εἰ γὰρ θανόντι νῦξ ἐπ' ὁφθαλμοῖς πέσοι,
- [404] τῷ τοι φέροντι σῆμ' ὑπέρκομπον τόδε
- [405] γένοιτ' ἂν ὁρθῶς ἐν δίκῳ τ' ἐπ' ὠνυμον,
- [406] καὐτὸς καθ' αὐτοῦ τήνδ' ὕβριν μαντεύσεται.
- [407] ἐγὼ δὲ τυδεῖ κεδνὸν Ἀστακοῦ τόκον

- [408] τῶνδ' ἀντιτάξιπροστάτην πυλῶμάτων,
- [409] μάλ' εὐγενῆ τε καὶ τὸν Αἰσχύνης θρόνον
- [410] τιμῶντα καὶ στυγοῦνθ' ὑπὲρ φρονας λόγους.
- [411] αἰσchrῶν γὰρ ἀργός, μὴ κακὸς δ' εἶναι φιλεῖ.
- [412] σπαρτῶν δ' ἀπ' ἀνδρῶν, ὧν Ἄρης ἐφείσατο,
- [413] ῥίζωμ' ἀνεῖται, κάρτα δ' ἔστ' ἐγχώριος,
- [414] Μελάνιππος· ἔργον δ' ἐν κύβοις Ἄρης κρινεῖ.
- [415] Δίκη δ' ὁμαίμων κάρτα νιν προστέλλεται
- [416] εἴργειν τεκούσημητρὶ πολέμιον δόρυ.
- [417] [Χορός]: τὸν ἄμόν νυν ἀντίπαλον εὐτυχεῖν
- [418] θεοὶ δοῖεν, ὥς δικαίως πόλεως
- [419] πρόμαχος ὄρνυται· τρέμω δ' αἵματη φόρους
- [420] μόρους ὑπὲρ φίλων
- [421] ὀλομένων ιδέσθαι.
- [422] [Ἄγγελος]: τούτῳ μὲν οὕτως εὐτυχεῖν δοῖεν θεοί·
- [423] Καπανεὺς δ' ἐπ' Ἡλέκτραισιν εἴληχεν πύλαις,
- [424] γίγας δ' ἄλλος τοῦ πάρος λελεγμένον
- [425] μείζων, ὁ κόμπος δ' οὐ κατ' ἄνθρωπον φρονεῖ,
- [426] πύργοις δ' ἀπειλεῖ δειν', ἃ μὴ κραίνοι τύχη.
- [427] θεοῦ τε γὰρ θέλοντος ἐκπέρσειν πόλιν
- [428] καὶ μὴ θέλοντος φησιν, οὐδὲ τὴν Διὸς
- [429] ἔριν πέδοι σκήψανέμποδὼν σχεθεῖν.
- [430] τὰς δ' ἀστραπὰς τε καὶ κεραυνίους βολὰς

- [431] μεσημ|βρινοῖ|σιθάλ|πεσιν|προσή|κασεν·
- [432] ἔχει|δὲ σῆ|μα γυ|μνὸν ἄν|δρα πυρ|φόρον,
- [433] φλέγει|δὲ λαμ|πὰς διὰ|χερῶν|ὥπλι|σμένη·
- [434] χρυσοῖς|δὲ φω|νεῖ γράμ|μασιν|πρήσω|πόλιν.
- [435] τοιῷ|δε φω|τὶ πέμ|πε— τίς|ξυστή|σεται,
- [436] τίς ἄν|δρα κομ|πάζον|ταμῇ|τρέσας|μενεῖ;
- [437] [Ἐτεοκλῆς]: καὶ τῷ|δε κέρ|δαι κέρ|δος ἄλ|λο τί|κτεται.
- [438] τῶν τοι|ματαί|ων ἄν|δράσιν|φρονη|μάτων
- [439] ἡ γλῶσσ'|ἀλη|θὴς γί|γνεται|κατή|γορος·
- [440] Καπανεύς|δ' ἀπει|λεῖ, δρᾶν|παρε|σκευα|σμένος,
- [441] θεοὺς|ἀτί|ζων, κᾶ|πογυ|μνάζων|στόμα
- [442] χαρᾶ|ματαί|αθνη|τὸς ὦν|εἰς οὐ|ρανὸν
- [443] πέμπει|γεγω|νᾶζῃ|νὶ κυ|μαίνοντ'|ἔπη·
- [444] πέποι|θα δ' αὐ|τῷ ξὺν|δίκη|τὸν πυρ|φόρον
- [445] ἥξειν|κεραυ|νόν, οὐ|δὲν ἐ|ξηκα|σμένον
- [446] μεσημ|βρινοῖ|σιθάλ|πεσιν|τοῖς ἡ|λίου.
- [447] ἀνήρ|δ' ἐπ'|αὐτῷ, κεί|στόμαρ|γός ἐστ'|ἄγαν,
- [448] αἶθων|τέτα|κταιλῇ|μα, Πολυ|φόντου|βία,
- [449] φερέγ|γυον|φρούρη|μα, προ|στατη|ρίας
- [450] Ἀρτέμι|δος εὐ|νοίαι|σι σὺν|τ' ἄλλοις|θεοῖς.
- [451] λέγ' ἄλ|λον ἄλ|λαις ἐν|πύλαις|εἰλη|χότα.
- [452] [Χορός]: ὅλοιθ' ὃς πόλει μεγάλ' ἐπεύχεται,
- [453] κεραυνοῦ δέ νιν βέλος ἐπισχέθου,

- [454] πρὶν ἐμὸν ἐσθορεῖν δόμον, πωλικῶν
- [455] θ' ἐδωλίων ὑπερκόπῳ
- [456] δορί ποτ' ἐκλαπάξαι.
- [457] [Ἄγγελος]: καὶ μὴν τὸν ἐν τεῦθεν λαχόν ταπρὸς πύλαις
- [458] λέξω· τρίτῳ γὰρ ἔτε ὀκλῷ τρίτος πάλος
- [459] ἐξ ὑπτιίου ἰπήδη σενεὺ χάλκου κράνους,
- [460] πύλαισι Νηίστη σιπροσβαλεῖν λόχον.
- [461] ἵππους δ' ἐν ἄμυκτῇρ σινέμβριμω μένας
- [462] δινεῖ, θελοῦσας πρὸς πύλαις πεπτωκέναι.
- [463] φιμοὶ δὲ συρίζουσι βάρβαρον τρόπον,
- [464] μυκτηροκόμποις πνεύμασιν πληροῦμενοι.
- [465] ἐσχημάτισται δ' ἀσπίς οὐ σμικρὸν τρόπον·
- [466] ἀνὴρ ὀπλίτης κλίμακος προσαμβάσεις
- [467] στείχει πρὸς ἐχθρῶν πύργον, ἐκπέρσαι θέλων.
- [468] βοᾷ δὲ χοῦτος γραμμάτων ἐν ξυλλαβαῖς,
- [469] ὡς οὐδ' ἂν Ἄρης σφ' ἐκβάλοι πυργωμάτων.
- [470] καὶ τῷδε φωνὴν πέμπε τὸν φερέγγυον
- [471] πόλεως ἀπειργειντῆσδε δοῦλιον ζυγόν.
- [472] [Ἑτεοκλής]: πέμποιμ' ἂν ἤδη τὸνδε, σὺν τύχῃ δέ τῳ·
- [473] καὶ δὴ πέπεμπταικόμπον ἐν χεροῖν ἔχων,
- [474] Μεγαρεύς, Κρέοντος σπέρμα τοῦ σπαρτῶν γένους,
- [475] ὃς οὐ τι μάργων ἱππικῶν φρυγαμάτων
- [476] βρόμον φοβηθεὶς ἐκ πυλῶν χωρήσεται,

- [477] ἀλλ' ἦ θανῶν τροφεῖ ἀπληρώσει χθονί,
- [478] ἦ καὶ δού' ἄνδρε καὶ πόλισμ' ἐπ' Ἀσπίδος
- [479] ἔλῶν λαφύροις δῶμα κοσμήσει πατρός.
- [480] κόμπαζ' ἐπ' ἄλλω, μὴ δέ μοι φθόνει λέγων.
- [481] [Χορός]: ἐπεύχομαι τῷδε μὲν εὐτυχεῖν, ἰὼ
- [482] πρόμαχ' ἐμῶν δόμων, τοῖσι δὲ δυστυχεῖν.
- [483] ὥς δ' ὑπέραυχα βάζουσιν ἐπὶ πτόλει
- [484] μαινομένα φρενί, τῶς νιν
- [485] Ζεὺς νεμέτωρ ἐπίδοι κοταίνων.
- [486] [Ἄγγελος]: τέταρτος ἄλλος, γείτονας πύλας ἔχων
- [487] Ὅγκας Ἀθάνας, ξὺν βοῇ παρίσταται,
- [488] ἵππο μέδοντος σχῆμα καὶ μέγας τύπος.
- [489] ἄλλω δὲ πολλήν, Ἀσπίδος κύκλον λέγω,
- [490] ἔφριξά δι' ἠέσαντος οὐκ ἄλλως ἐρῶ.
- [491] ὁ σηματοῦργος δ' οὐ τις εὐτελής ἄρ' ἦν
- [492] ὅστις τόδ' ἔργον ὥπασεν πρὸς Ἀσπίδι,
- [493] Τυφῶν' ἰέντα πύρπνοον διὰ στόμα
- [494] λιγνὺν μέλαιναν, αἰόλην πυρὸς κάσιν.
- [495] ὄφρων δὲ πλεκτάναι σπερὶ δρομον κύτος
- [496] προσηδάφιστα κοιλογάστορος κύκλου.
- [497] αὐτὸς δ' ἐπηλάλαξεν, ἔνθεος δ' Ἄρει
- [498] βακχᾶ πρὸς ἄλκην Θυῖας ὥς φόβον βλέπων.
- [499] τοιοῦδε φωτὸς πεῖραν εὔφυλακτέον.

- [500] Φόβος | γὰρ ἤδη πρὸς | πύλαις | κομπά|ζεται.
- [501] [Ἐτεοκλής]: πρῶτον | μὲν Ὅγ|κα Παλ|λάς, ἦτ' | ἀγχι|πτολις,
- [502] πύλαι|σι γεί|των, ἄν|δρὸς ἐχ|θαίρουσ' | ὕβριν,
- [503] εἴρξει | νεοσ|σῶνῶς | δράκον|ταδύ|σχιμον·
- [504] Ὑπέρ|βιος |δέ, κεδ|νὸς Οἴ|νοπος |τόκος,
- [505] ἀνὴρ |κατ' ἄν|δρα τοῦ|τον ἡ|ρέθη, |θέλων
- [506] ἐξι|στορῇ|σαμοῖ|ραν ἐν |χρεῖα|τύχης,
- [507] οὔτ' εἴ|δος οὔ|τε θυ|μὸν οὐδ' | ὅπλων |σχέσιν
- [508] μωμη|τός, Ἐρ|μῆς δ' εὐ|λόγως |ξυνή|γαγεν.
- [509] ἐχθρὸς | γὰρ ἄ|νὴρ ἄν|δρὶ τῷ |ξυστή|σεται,
- [510] ξυνοί|σετον |δὲ πολε|μίους |ἐπ' ἄ|σπίδων
- [511] θεοὺς· |ὁ μὲν | γὰρ πύρ|πνοον |Τυφῶν' |ἔχει,
- [512] Ὑπερ|βίῳ |δὲ Ζεὺς |πατὴρ |ἐπ' ἄ|σπίδος|
- [513] σταδαῖ|ος ἡ|σται, διὰ |χερὸς |βέλος |φλέγων·
- [514] κοῦπω |τις εἴ|δε Ζῆ|νά που |νικώ|μενον.
- [515] τοιά|δε μέν|τοι προ|σφίλει|αδαι|μόνων·
- [516] πρὸς τῶν |κρατοῦν|τωνδ' ἐ|σμέν, οἱ |δ' ἦσσω|μένων,
- [517] εἰ Ζεὺς |γε Τυ|φῶ καρ|τερῷ|τερος|μάχη·
- [518] Ὑπερ|βίῳ |τε πρὸς |λόγον |τοῦ σή|ματος|
- [519] εἰκὸς |δὲ πρᾶ|ξιν ἄν|δρας ὧδ' |ἀντι|στάτας,
- [520] σωτὴρ |γένοιτ' |ἄν Ζεὺς |ἐπ' ἄ|σπίδος |τυχών.
- [521] [Χορός]: πέποιθα δὴ τὸν Διὸς ἀντίτυπον ἔχοντ'
- [522] ἄφιλον ἐν σάκει τοῦ χθονίου δέμας|

- [523] δαίμονος, ἐχθρὸν εἵκασμα βροτοῖς τε καὶ
- [524] δαροβίοισι θεοῖσιν,
- [525] πρόσθε πυλᾶν κεφαλὰν ἰάψειν.
- [526] [Ἄγγελος]: οὕτως γένοιτο. τὸν δὲ πέμπτον αὖ λέγω,
- [527] πέμπταισι προσταχθέντα βορραῖαις πύλαις,
- [528] τύμβον κατ' αὐτὸν Διογενοῦς Ἀμφίονος·
- [529] ὅμνυσι δ' αἶχμήν ἥν ἔχει μᾶλλον θεοῦ
- [530] σέβειν πεποιθὼς ὁμάτων θ' ὑπέρτερον,
- [531] ἢ μὴν λαπάξειν ἅστυ Καδμείων βίᾳ
- [532] Διός· τόδ' αὖ δ᾽ ἄμνητρος ἐξ ὅρεσκόου
- [533] βλάστημα καλὸν λίπρωρον, ἂν δρόπαις ἀνήρ·
- [534] στείχει δ' ἴουλος ἄρτι διὰ παρηίδων,
- [535] ὥρας φυοῦσης, τὰρ φῦς ἂν τέλλουσα θρίξ.
- [536] ὁ δ' ὦμόν, οὗτι παρθένων ἐπώλυμον,
- [537] φρόνημα, γοργὸν δ' ὅμμ' ἔχων, προσίσταται.
- [538] οὐ μὴν ἀκόμπαστος γ' ἐφίσταται πύλαις·
- [539] τὸ γὰρ πόλεως ὄνειδος ἐν χαλκῇ λάτῳ
- [540] σάκει, κυκλωτῶσώματος προβλήματι,
- [541] Σφίγγ' ὦμόσι τονπροσμεμηχανημένην
- [542] γόμοις ἐνώμαλαμπρὸν ἔκκρουστον δέμας,
- [543] φέρει δ' ὑφ' αὐτῇ φῶτα Καδμείων ξίνα,
- [544] ὥς πλεῖστ' ἐπ' ἀνδρὶ τῷ δ' ἰάπτεσθαι βέλη.
- [545] ἐλθὼν δ' ἔοικεν οὐ καπὴν λεύσειν μάχην,

- [546] μακρᾶς | κελεύ|θουδ' οὐ | καται|σχυνεῖν|πόρον,
- [547] ὁ Παρ|θενοπαῖ|ος Ἄρ|κάς· ὁ δὲ | τοιόσδ' | ἀνὴρ
- [548] μέτοι|κος, Ἄρ|γει δ' ἐ|κτίνων | καλὰς | τροφάς,
- [549] πύργοις | ἀπει|λεῖτοῖσδ' | ἃ μὴ | κραῖνοι | θεός.
- [550] [Ἐτεοκλής]: εἰ γὰρ | τύχοι|ενῶν | φρονοῦ|σιπρὸς | θεῶν,
- [551] αὐτοῖς | ἐκεῖ|νοῖς ἀνο|σίοις | κομπά|σμασιν·
- [552] ἧ τᾶν | πανῶ | λεισπαγ|κάκως | τ' ὀλοῖ|ατο.
- [553] ἔστιν | δὲ καὶ | τῷδ', ὃν | λέγεις | τὸν Ἄρ|κάδα,
- [554] ἀνὴρ | ἄκομ|πος, χειρ | δ' ὀρᾷ | τὸ δρᾶ|σιμον,
- [555] Ἄκτωρ | ἀδελ|φὸς τοῦ | πάρος | λελεγ|μένου·
- [556] ὃς οὐκ | ἐά|σει γλῶσ|σαν ἐργ|μάτων | ἄτερ
- [557] ἔσω | πυλῶν | ῥέου|σαν ἄλ|δαίνειν | κακά,
- [558] οὐδ' εἰ|σα μεῖ|ψαιθη|ρὸς ἐχ|θίστου | δάκους
- [559] εἰκῶ | φέρον|ταπολε|μίας | ἐπ' ἃ | σπίδος·
- [560] ἧ 'ξω|θεν εἴ|σω τῷ | φέρον|τιμέμ|ψεται,
- [561] πυκνοῦ | κροτη|σμοῦ τυγ|χάνουσ' | ὑπὸ | πτόλιν.
- [562] θεῶν | θελόν|των τᾶν | ἀλη|θεύσαιμ' | ἐγώ.
- [563] [Χορός]: ἰκνεῖται λόγος διὰ στηθέων,
- [564] τριχὸς δ' ὀρθίας πλόκαμος ἵσταται,
- [565] μεγάλα μεγαληγόρων κλυοῦσα
- [566] ἀνοσίων ἀνδρῶν. εἴθε γὰρ θεοὶ
- [567] τοῦδ' ὀλέσειαν ἐν γᾶ.
- [568] [Ἄγγελος]: ἔκτον | λέγοιμ' | ἄν ἄν | δρα σω|φρονέ|στατον,

- [569] ἀλκὴν | τ' ἄρι | στον μάν | τιν, Ἀμ | φιάρεω | βίαν·
- [570] Ὅμολω | ίσιν | δὲ πρὸς | πύλαις | τεταγ | μένος |
- [571] κακοῖ | σι βά | ζει πολ | λὰ Τυ | δέως | βίαν·
- [572] τὸν ἄν | δροφόν | την, τὸν | πόλεως | ταρα | κτορα,
- [573] μέγι | στον Ἄρ | γει τῶν | κακῶν | διδά | σκαλον,
- [574] Ἐρι | νύος | κλητῇ | ρα, πρό | σπολον | φόνου,
- [575] κακῶν | τ' Ἄδρα | στῶ τῶν | δε βου | λευτή | ριον.
- [576] καὶ τὸν | σὸν αὖ | θις προ | σθροῶν | ὁμό | σπορον,
- [577] ἐξυ | πτιά | ζωνῶ | μα, Πολυ | νείκους | βίαν,
- [578] δῖς τ' ἐν | τελευ | τῇ τοῦ | νομ' ἐν | δατοῦ | μενος,
- [579] καλεῖ. | λέγει | δὲ τοῦτ' | ἔπος | διὰ | στόμα·
- [580] ἧ τοῖ | ον ἔρ | γον καὶ | θεοῖ | σι προ | σφιλές,
- [581] καλόν | τ' ἀκοῦ | σαι καὶ | λέγειν | μεθυ | στέροις,
- [582] πόλιν | πατρῷ | ανκαὶ | θεοὺς | τοὺς ἐγ | γενεῖς |
- [583] πορθεῖν, | στράτευμ' | ἐπα | κτὸν ἐμ | βεβλη | κότα;
- [584] μητρός | τε πη | γὴν τίς | κατα | σβέσει | δίκη;
- [585] πατρίς | τε γαῖ | α σῆς | ὑπὸ | σπουδῆς | δορὶ |
- [586] ἀλοῦ | σα πῶς | σοι ξύμ | μαχος | γενή | σεται;
- [587] ἔγω | γε μὲν | δὴ τήν | δε πι | ανῶ | χθόνα,
- [588] μάντις | κεκευ | θῶς πολε | μίας | ὑπὸ | χθονός.
- [589] μαχώ | μεθ', οὐκ | ἄτι | μονέλ | πίζω | μόρον.
- [590] τοιαῦθ' | ὁ μάν | τις ἄ | σπιδ' εὐ | κήλως | ἔχων |
- [591] πάγχαλ | κον ἡῦ | δα· σῆ | μα δ' οὐκ | ἐπῆν | κύκλω.

- [592] οὐ γὰρ δοκεῖν ἄριστος, ἀλλ' εἶναι θέλει,
- [593] βαθεῖαν ἄλσος διὰ φρενὸς καρπούμενος,
- [594] ἔξ ἧς τὰ κεδνὰ βλάστανει βουλεύματα.
- [595] τούτῳ σοφούς τε καὶ γαθοὺς ἀντηρέτας
- [596] πέμπειν ἐπαίνῳ δεινὸς δὲ θεοὺς σέβει.
- [597] [Ἐτεοκλής]: φεῦ τοῦ ξυναλλάσσοντο φρονιθοῦ βροτοῖς
- [598] δίκαιον ἄνδρα τοῖσι δυσσεβεστέροις.
- [599] ἐν παντὶ πράγῃ δ' ἔσθ' ὁμιλίας κακῆς
- [600] κάκιστον οὐδέν, καρπὸς οὐ κομιστέος.
- [601] ἄτης ἄρουρα θάνατον ἐκ καρπίζεται.
- [602] ἦ γὰρ ξυνεῖσβας πλοῖον εὐσεβῆς ἀνὴρ
- [603] ναύταισι θερμοῖς καὶ πανουργίᾳ τινι
- [604] ὄλωλεν ἀνδρῶν σὺν θεοπτύστῳ γένει,
- [605] ἦ ξὺν πολίταις ἀνδράσιν δίκαιος ὢν
- [606] ἐχθροῖς ξένοις τε καὶ θεῶν ἀμνήμοισιν,
- [607] ταύτου κυρῆσας ἐκδίκως ἀγρεύματος,
- [608] πληγεῖς θεοῦ μάστιγι παγκοίνῳ δάμῃ.
- [609] οὕτως δ' ὁ μάντις, υἱὸν Οἰκλέους λέγω,
- [610] σώφρων δίκαιος ἀγαθὸς εὐσεβῆς ἀνὴρ,
- [611] μέγας προφήτης, ἀνοσοῖσι συμμιγεῖς
- [612] θρασυστόμοισιν ἀνδράσιν βίᾳ φρενῶν,
- [613] τείνουσι πομπὴν τὴν μακρὰν πάλιν μολεῖν,
- [614] Διὸς θέλοντος ξυγκαθελεῖν κυσθήσεται.

- [615] δοκῶ | μὲν οὖν | σφε μηδὲ προ|σβαλεῖν | πύλαις |
- [616] οὐχ ὥς | ἄθυ|μος οὐδὲ λή|ματος | κάκῃ, |
- [617] ἀλλ' οἷ | δὲν ὥς | σφε χρῆ | τελευ|τῆσαι | μάχῃ, |
- [618] εἰ καρ|πὸς ἔ|σται θε|σφάτοι | σιλο|ξίου· |
- [619] φιλεῖ | δὲ σι|γᾶν ἦ | λέγειν | τὰ καί|ρια. |
- [620] ὁμῶς | δ' ἐπ' αὐ|τῷ φῶ|τα, Λα|σθένους | βίαν, |
- [621] ἐχθρό|ξενον | πυλω|ρὸν ἄν|τιτά|ξομεν, |
- [622] γέρον|τα τὸν | νοῦν, σάρ|κα δ' ἡ|βῶσαν | φύει, |
- [623] ποδῶ|κες ὅμ|μα, χεῖ|ρα δ' οὐ | βραδύ|νεται |
- [624] παρ' ἅ|σπίδος | γυμνω|θὲν ἄρ|πάσαι | δόρυ. |
- [625] θεοῦ | δὲ δῶ|ρόν ἐ|στιν εὐ|τυχεῖν | βροτούς. |
- [626] [Χορός]: κλύοντες θεοὶ δικαίας λιτὰς |
- [627] ἀμετέρας τελεῖθ', ὥς πόλις εὐτυχῇ, |
- [628] δορίπωνα κάκ' ἐκτρέποντες ἐς γᾶς |
- [629] ἐπιμόλους· πύργων δ' ἔκτοθεν βαλὼν |
- [630] Ζεὺς σφε κάνοι κεραυνῶ. |
- [631] [Ἄγγελος]: τὸν ἔ|βδομον | δὴ τόνδ' | ἐφ' ἐ|βδόμαις | πύλαις |
- [632] λέξω, | τὸν αὐ|τοῦ σοῦ | κασί|γνητον, | πόλει |
- [633] οἷας | ἄρᾱ|τα καὶ | κατεύ|χεται | τύχας· |
- [634] πύργοις | ἔπεμ|βὰς κἀ|πικη|ρυχθεὶς | χθονί, |
- [635] ἄλῳ|σιμον | παιᾶν' | ἐπε|ξιακ|χάσας, |
- [636] σοὶ ξυμ|φέρει|σθα καὶ | κτανὼν | θανεῖν | πέλας, |
- [637] ἦ ζῶντ' | ἀτι|μαστῇ|ρα ὥς | ἀνδρῃ|λάτῃν |

- [638] φυγῇ | τὸν αὐτὸν τόνδε | τεῖσασθαι | τρόπον.
- [639] τοιαῦτ' | αὐτεῖκαὶ | θεοὺς | γενεθλίους |
- [640] καλεῖ | πατρῷας | γῆς | ἐποπτήρας | λιτῶν |
- [641] τῶν ὧν | γενέσθαι | πάγχυ Πολυνείκους | βία.
- [642] ἔχει | δὲ καὶ | νοπηγέξεῦ | κυκλον | σάκος |
- [643] διπλοῦν | τε σῆμα | προσμεμηχανημένον.
- [644] χρυσήλατον | γὰρ ἄνδρα | τευχιστὴν | ἰδεῖν |
- [645] ἄγει | γυνή | τις σωφρόνως | ἡγουμένη.
- [646] Δίκη | δ' ἄρ' εἰναί φησιν, | ὥς | τὰ γράμματα |
- [647] λέγει | κατὰ ξωδ' ἄνδρα | τόνδε καὶ πόλιν |
- [648] ἔξει | πατρῶωνδ' | μάτων | τ' ἐπιστροφάς.
- [649] τοιαῦτ' | ἐκεῖ νωνέσσι | τὰ ξευρήματα.
- [650] σὺ δ' αὐτὸς ἤδη γινώθι | τίνα πέμπειν | δοκεῖ.
- [651] ὥς οὔ ποτ' ἄνδρ' ἰτ' ὦδε | κηρυκευμάτων |
- [652] μέμψη, | σὺ δ' αὐτὸς γινώθι | ναυκληρεῖν | πόλιν.
- [653] [Ἐτεοκλής]: ὦ θεομανές | τε καὶ θεῶν | μέγα στύγος,
- [654] ὦ πανδάκρυτον ἄμυν Οἰδίπου | γένος.
- [655] ὦ μοι, | πατρὸς δὴ νῦν | ἄρα | τελεσφόροι.
- [656] ἀλλ' οὔτε κλαίειν οὔτ' ὀδύρεσθαι | πρέπει,
- [657] μὴ καὶ | τεκνωθῆδ' | σφοδρῶτερος | γόος.
- [658] ἐπὶ νύμφῃ | δὲ κάρτα, | Πολυνείκει | λέγω,
- [659] τάχ' εἰσόμεσθα | τοῦ πίσημ' ὅποι | τελεῖ,
- [660] εἴ νιν | κατὰ ξειχρὸς | τέτυκτα | γράμματα

- [661] ἐπ' ἀσπίδος φλύον τασὺν φοίτῳ φρενῶν.
- [662] εἰ δ' ἡ Διὸς παῖς παρθένος Δίκη παρῆν
- [663] ἔργοις ἐκεῖνου καὶ φρεσίν, τάχ' ἂν τόδ' ἦν.
- [664] ἀλλ' οὐτε νιν φυγόντα μὴ τρόθεν σκότον,
- [665] οὐτ' ἐν τροφαῖσιν, οὐτ' ἐφ' ἡβήσαν τάω,
- [666] οὐτ' ἐν γενεῇ οὐξ ὑλογῆ τριχῶματος,
- [667] Δίκη προσεῖδε καὶ κατηξίωσατο.
- [668] οὐδ' ἐν πατρῷας μὴν χθονὸς κακοῦ χίρα
- [669] οἴμαι νιν αὐτῷ νῦν παραστατεῖν πέλας.
- [670] ἧ δ' ἦτ' ἂν εἴη πανδίκως ψευδῶν νομος
- [671] Δίκη, ξυνοῦσα φῶτι παντόλμῳ φρένας.
- [672] τούτοις πεποιθὼς εἴμι καὶ ξυστήσομαι
- [673] αὐτός· τίς ἄλλος μάλλον ἐνδικῶτερος;
- [674] ἄρχοντί τ' ἄρχων καὶ κασιγνήτῳ κάσις,
- [675] ἐχθρὸς σὺν ἐχθρῷ στήσομαι. φέρ' ὥς τάχος
- [676] κνημίδας, αἰχμῆς καὶ πέτρων προβλήματα.
- [677] [Χορός]: μή, φίλτατ' ἀνδρῶν, οἱ δῖπου τέκος, γένῃ
- [678] ὀργὴν ὁμοῖοις τῷ κάκιστ' αὐδωμένῳ.
- [679] ἀλλ' ἂν δρας Ἄργεῖοι σικαδμείους ἄλεις
- [680] ἐς χεῖρας ἐλθεῖν· αἴμα γὰρ καθάρσιον.
- [681] ἀνδροῖν δ' ὁμαίμοιν θάνατος ὧδ' αὐτοκτόνος,
- [682] οὐκ ἔστι γῆρας τοῦδε τοῦ μιάσματος.
- [683] [Ἑτεοκλής]: εἶπερ κακὸν φέροι τις, αἰσχύνῃς ἄτερ

[684] ἔστω· μόνον γὰρ κέρδος ἐν τεθνη|κόσι·
 [685] κακῶν δὲ καὶ|σχρῶν οὐ|τιν' εὐ|κλείαν ἐρεῖς·

Stasimon

[686] [Χορός]: τί μέμονας, τέκνον; μή τί σε θυμοπλη|θῆς|
 [687] δορίμαργος ἄτα φερέτω· κακοῦδ'|
 [688] ἔκβαλ' ἔρωτος ἀρχάν·
 [689] [Ἑτεοκλής]: ἐπεὶ τὸ πρᾶγ|μα κάρτ' ἐπι|σπέρχει|θεός,
 [690] ἵτω|κατ' οὐ|ρον κύ|μα Κω|κυτοῦ|λαχὸν|
 [691] Φοίβω|στυγῇ|θὲνπᾶν|τὸ Λα|ίου|γένος·
 [692] [Χορός]: ὠμοδακῆς σ' ἄγαν ἵμερος ἐξοτρύ|νει|
 [693] πικρόκαρπον ἀνδροκτασίαν τελεῖν|
 [694] αἵματος οὐ θεμιστοῦ·
 [695] [Ἑτεοκλής]: φίλου γὰρ ἐχ|θρά μοι πατρὸς|τάλαιν' ἀρὰ|
 [696] ξηροῖς ἀκλαύ|τοιςδμ|μασιν|προσιζάνει,
 [697] λέγου|σα κέρ|δος πρότε|ρον ὑ|στέρου|μόρου·
 [698] [Χορός]: ἀλλὰ σὺ μὴ 'ποτρύνου· κακὸς οὐ κεκλή|ση|
 [699] βίον εὖ κυρήσας· μελάναιγες οὐκ|
 [700] εἶσι δόμων Ἑρινύς, ὅταν ἐκ χερῶν|
 [701] θεοὶ θυσίαν δέχωνται·
 [702] [Ἑτεοκλής]: θεοῖς μὲν ἦ|δη πως παρη|μελή|μεθα,
 [703] χάρις δ' ἀφ' ἡ|μῶν ὅλο|μένων|θαυμά|ζεται·
 [704] τί οὖν ξτ' ἂν|σαῖνοι|μενόλε|θριον|μόρον;

[705] [Χορός]: νῦν ὅτε σοι παρέστακεν· ἐπεὶ δαίμων

[706] λήματος ἐν τροπαίᾳ χρονίᾳ μεταλλαστὸς

[707] ἴσως ἂν ἔλθοι θελεμωτέρῳ

[708] πνεύματι· νῦν δ' ἔτι ζεῖ.

[709] [Ἑτεοκλής]: ἐξέζεσεν γὰρ Οἰδίπου κατεύγματα·

[710] ἄγαν δ' ἄληθεὶς ἐνὺπνίων φαντασμάτων

[711] ὄψεις, πατρῶων χρημάτων δατήριοι.

[712] [Χορός]: πιθοῦ γυναιξί, καὶ περ οὐ στέργων ὅμως.

[713] [Ἑτεοκλής]: λέγεται ἂν ὦν ἄνητις· οὐδὲ χρηὴ μακράν.

[714] [Χορός]: μὴ λθῆς ὁδοῦς σὺ τάσδ' ἐφ' ἐβδόμαις πύλαις.

[715] [Ἑτεοκλής]: τεθηγμένον τοί μ' οὐκ ἄπαμβλυνεῖς λόγῳ.

[716] [Χορός]: νίκην γε μέντοι καὶ κακὴν τιμᾶ θεός.

[717] [Ἑτεοκλής]: οὐκ ἄνδρ' ὀπλίστην τοῦτο χρηὴ στέργειν ἔπος.

[718] [Χορός]: ἀλλ' αὐτὰ δὲ λφοναῖμα δρέψασθαι θέλεις;

[719] [Ἑτεοκλής]: θεῶν διδόντων οὐκ ἂν ἐκφύγοις κακά.

Strophe 1

[720] [Χορός]: πέφρικα τὰν ὠλεσίοικον

[721] θεόν, οὐ θεοῖς ὁμοίαν,

[722] παναλαθῇ κακόμαντιν

[723] πατρὸς εὐκταίαν Ἑρινὺν

[724] τελέσαι τὰς περιθύμους

[725] κατάρας Οἰδιπόδα βλαψίφρονος·

[726] παιδολέτωρ δ' ἔρις ἅδ' ὀτρύνει.

Antistrophe 1

[727] [Χορός]: ξένος δὲ κλήρους ἐπινωμᾷ,

[728] Χάλυβος Σκυθᾶν ἄποικος,

[729] κτεάνων χρηματοδαίτας

[730] πικρός, ὠμόφρων σίδαρος,

[731] χθόνα ναίειν διαπήλας,

[732] ὀπόσαν καὶ φθιμένοισιν κατέχειν,

[733] τῶν μεγάλων πεδίων ἀμοίρους.

Strophe 2

[734] [Χορός]: ἐπεὶ δ' ἂν αὐτοκτόνως

[735] αὐτοδάικτοι θάνωσι,

[735b] καὶ γαῖα κόνις

[737] πῖη μελαμπαγὲς αἷμα φοίνιον,

[738] τίς ἂν καθαρμοὺς πόροι,

[739] τίς ἂν σφε λούσειεν; ὦ πόνοι δόμων

[741] νέοι παλαιοῖσι συμμιγεῖς κακοῖς.

Antistrophe 2

[742] [Χορός]: παλαιγενῇ γὰρ λέγω

[743] παρβασίαν ὠκύποινον,

[743b] αἰῶνα δ' ἐς τρίτον

[745] μένειν, Ἀπόλλωνος εὖτε Λάιος

[746] βίᾱ, τρὶς εἰπόντος ἐν|

[747] μεσομφάλοις Πυθικοῖς χρηστηρίοις|

[749] θνᾶσκοντα γέννας ἄτερ σῶζειν πόλιν,|

Strophe 3

[750] [Χορός]: κρατηθεῖς δ' ἐκ φίλων ἀβουλιᾶν|

[751] ἐγένετο μὲν μόρον αὐτῷ,|

[752] πατροκτόνον Οἰδιπόδαν,|

[753] ὅστε ματρὸς ἀγνᾶν|

[754] σπείρας |ἄρου|ραν, ἵν' ἐ|τράφη,|

[755] ῥίζαν αἱματόεσσαν|

[756] ἔτλα· παράνοια συνᾶγε|

[757] νυμφίους φρενώλεις. |

Antistrophe 3

[758] [Χορός]: κακῶν δ' ὥσπερ θάλασσα κύμ' ἄγει·|

[759] τὸ μὲν πίτνον, ἄλλο δ' αἰεῖρει|

[760] τρίχαλον, ὃ καὶ περὶ πρύμ||ναν|

[761] πόλεως καχλάζει. |

[762] μετα|ξὺ δ' ἀλ|κὰ δι' ὀ|λίγου|

[763] τείνει, πύργος ἐν εὐρει. |

[764] δέδοικα δὲ σὺν βασιλεῦσι|

[765] μὴ πόλις δαμασθῇ. |

Strophe 4

[766] [Χορός]: τελειᾶν γὰρ παλαιφάτων ἄρᾶν
[767] βαρεῖται καταλλαγαί·
[768] τὰ δ' ὅλο' οὐ παρέρχεται·
[769] πρόπρυμνα δ' ἐκβολὰν φέρει
[770] ἀνδρῶν ἀλφηστᾶν
[771] ὄλβος ἄγαν παχυνθείς·

Antistrophe 4

[772] [Χορός]: τίν' ἀνδρῶν γὰρ τοσόνδ' ἐθαύμασαν
[773] θεοὶ καὶ ξυνέστιοι
[774] πολύβατός τ' ἀγῶν βροτῶν,
[775] ὅσον τότ' Οἰδίπουν τίον,
[776] τὰν ἀρπαξάνδραν
[777] κῆρ' ἀφελόντα χώρας;

Strophe 5

[778] [Χορός]: ἐπεὶ δ' ἀρτίφρων
[779] ἐγένετο μέλεος ἀθλίων
[780] γάμων, ἐπ' ἅλγει δυσφορῶν
[781] μαινομένα κραδίᾳ
[782] δίδυμα κάκ' ἐτέλεσεν·
[783] πατροφόνῳ χερὶ τῶν
[784] κρεισσοτέκνων ὁμμάτων ἐπλάγχθη·

Antistrophe 5

- [785] [Χορός]: τέκνοις δ' ἀγρίας|
- [786] ἐφῆ|κεν ἐπὶ|κότους|τροφᾶς|
- [787] αἰαῖ|, πικρο|γλώσσους|ἀράς|
- [788] καί σφε σιδαρονόμω|
- [789] διὰ χερὶ ποτε λαχεῖν|
- [790] κτήματα· νῦν δὲ τρέω|
- [791] μὴ τελέσῃ καμψίπους Ἑρινύς·|
- [792] [Ἄγγελος]: θαρσεῖ|τε, παῖ|δες μὴ|τέρων|τεθραμ|μέναι·|
- [793] πόλις|πέφευ|γενῆ|δε δού|λιον|ζυγόν·|
- [794] πέπτω|κεν ἄν|δρῶν ὁ|βρίμων|κομπά|σματα·|
- [795] πόλις|δ' ἐν|εὐ|δίᾳ|τε καὶ|κλυδω|νίου|
- [796] πολλαῖ|σι πλη|γαῖς ἄντ|λον οὐκ|ἐδέξ|ατο·|
- [797] στέγει|δὲ πύρ|γος, καὶ|πύλας|φερεγ|γύοις|
- [798] ἐφρα|ξάμε|σθαμονο|μάχοι|σιπρο|στάταις·|
- [799] καλῶς|ἔχει|τὰ πλεῖστ',|ἐν ἔξ|πυλώ|μασι·|
- [800] τὰς δ' ἐ|βδόμας|ὁ σε|μνὸς ἐ|βδομα|γέτης|
- [801] ἄναξ|Ἀπόλ|λωνεῖ|λετ', Οἰ|δίπου|γένει|
- [802] κραίνων|παλαι|ἄςλα|ῖου|δυσβου|λίας·|
- [803] [Χορός]: τί δ' ἔ|στι πρᾶγ|μα νεό|κοτον|πόλει|πλέον;|
- [804] [Ἄγγελος]: πόλις|σέσω|σται·βασί|λέες|δ' ὁμό|σποροι—|
- [805] [Χορός]: τίνες;|τί δ' εἴ|πας; παρα|φρονῶ|φόβω|λόγου·|
- [806] [Ἄγγελος]: φρονοῦ|σα νῦν|ἄκου|σον·Οἰ|δίπου|τόκοι|

[807] [Χορός]: οἷ γῶ τάλαινα, μάντις εἰμὶ τῶν κακῶν.

[808] [Ἄγγελος]: οὐδ' ἄμφιλέκτωσμήν κατεσποδὴ μένοι—

[809] [Χορός]: ἐκεῖθι κεῖσθον; βαρέα δ' οὖν ὅμως φράσον.

[810] [Ἄγγελος]: ἄνδρες τεθνήσιν ἐκ χειρῶν αὐτοκτόνων.

[811] [Χορός]: οὕτως ἀδελφαῖς χερσὶν ἢ ναίρονθ' ἅμα;

[812] οὕτως ὁ δαίμων κοῖνός ἦν ἀμφοῖν ἅγαν.

[813] αὐτὸς δ' ἀναλοῖ δῆτα δύσποτμον γένος.

[814] τοιαῦτα χαίρειν καὶ δακρύεσθαι πάρα.

[815] πόλιν μὲν εὖ πράσσοι, σάνοι δ' ἐπιστάται,

[816] δισσῶ στρατηγῶ, διέλαχον σφυρηλάτῳ

[817] Σκύθη σιδήρωκτημάτων παμπησίαν.

[818] ἔξουσι δ' ἦν λάβωσιν ἐν ταφῇ χθονός,

[819] πατὴρ δ' κατ' εὐχὰς δυσπότης φερομένοιο.

[820] [πόλις] σέσωσται· βασιλῆοι δ' ὅμοσπόροι.

[821] πέπωκεν αἶμά γαί' ὑπ' ἀλήλων φόνῳ.

Stasimon

[822] [Χορός]: ὦ μεγάλε Ζεῦ καὶ πολιοῦχοι

[823] δαίμονες, οἳ δὲ Κάδμου πύργους

[824] τούσδε ῥύεσθε,

[825] πότερον χαίρω κάπολο λύξω

[826] πόλεως ἀσινεῖ σωτῆρι.

[827] ἢ τοὺς μογεροὺς καὶ δυσδαίμονας

[830] ἀτέκνους | κλαύσω | πολεμάρ|χους;

[831] οἷ δῆτ' | ὀρθῶς | κατ' ἐπω|νυμίαν|

[832] καὶ πολυ|νεικεῖς|

[832b] ὦλοντ' | ἀσεβεῖ | διανοί|α.

Strophe 1

[833] [Χορός]: ὦ μέ|λαινα | καὶ τε|λεία | γένεος | Οἰδί|πουτ' ἀρά,|

[834] κακόν | με καρ|δίαν | τι περι|πίτνει | κρύος·|

[835] ἔτευξα τύμβῳ μέλος|

[836] Θυιᾶς αἱματοσταγεῖς|

[837] νεκροὺς | κλύου|σαδυ|σμόρως|

[838] θανόν|τας· ἧ | δύσορ|νιςᾗ||δε|

[839] ξυναυλία δορός·|

Antistrophe 1

[840] [Χορός]: ἐξέ|πραξεν, | οὐδ' ἀ|πεῖπεν | πατρόθεν | εὐκταί|αφάτις·|

[842] βουλαὶ | δ' ἄπι|στοι Λα|ΐου | διήρ|κεσαν·|

[843] μέριμνα δ' ἀμφὶ πτόλιν·|

[844] θέσφατ' οὐκ ἀμβλύνεται·|

[845] ἰὼ | πολύ|στονοι, | τόδ' ἥρ||γάσασθ|

[846] ' ἄπι|στον· ἧλ|θε δ' αἰ||ακτὰ|
 Unglaubliches·
 unbelievable·

[847] πῆματ' οὐ λόγῳ·|

[848] τάδ' αὐ|τόδη|λα, προῦ|πτος ἀγ|γέλου | λόγος·|

[849] διπλαῖν | μερί|μναινδιδύ|μα νῦν | ὀρῶ | κακά,|

- [850] αὐτοφόν|να, δίμο|ρα τέλε|α τάδε |πάθη. |τί φῶ;
- [852] τί δ' ἄλ|λο γ' ἢ |πόννοι |πόνων |ἐφέ|στιοι;
- [854] ἀλλὰ γόνων, ὦ φίλαι, κατ' οὔρον|
- [855] ἐρέσ|σετ' ἄμ|φι κρα|τὶ πόμ|πιμον |χεροῖν|
- [856] πίτυλον, |ὃς αἰ|έν δι' Ἀ|χέροντ' |ἀμεί|βεται|
- [857] τὰν ἄ|στολον |μελάγ|κροκον|θεω|ρίδα,
- [858] τὰν ἀ|στιβῆ|Παιῶ|νι, τὰν |ἀνά|λιον|
- [860] πάνδοκον εἰς ἀφανῇ τε χέρσον.
- [861] ἀλλὰ γὰρ |ἦκουσ' |αἶδ' ἐπὶ |πρᾶγος|
- [862] πικρὸν Ἄν|τιγόνη |τ' ἡδ' ἴ|σμήνη,
- [863] θρῆνον ἀ|δελφοῖν· |οὐκ ἄμ|φιβόλως|
- [864] οἴμαί |σφ' ἐρατῶν |ἐκ βαθυ|κόλπων|
- [865] στηθέων |ἦσειν |ἄλγος ἐ|πάξιον.
- [866] ἡμᾶς |δὲ δίκη |πρότερον |φήμης|
- [867] τὸν δυ|σκέλαδόν |θ' ὕμνον Ἑ|ρινύος|
- [868] ἰαχεῖν |Ἀίδατ'|
- [870] ἐχθρὸν |παιᾶν' |ἐπιμέλ|πειν.
- [871] δυσάδελ|φόταται |πασῶν |όπόσαι|
- [872] στρόφον ἐ|σθῆσιν |περιβάλ|λονται,
- [873] κλαίω, |στένομαι, |καὶ δόλος |οὐδεὶς|
- [874] μὴ' κ φρενὸς |ὀρθῶς |με λιγαί|νειν.

Strophe 2

[875] [Χορός]: ἰὼ ἰὼ δύσφρονες,
[876] φίλων ἄπιστοικαὶ κακῶν ἀτρύμονες,
[877] δόμους πατρώους ἐλόντες
[878] μέλεοι σὺν αἰχμᾶ.
[879] μέλεοι δῆθ' οἷ μελέους θανάτους
[880] εὖρον το δόμων ἐπὶ λύμη.

Antistrophe 2

[881] [Χορός]: ἰὼ ἰὼ δωμάτων
[882] ἔρειψίτοιχοι καὶ πικρὰς μοναρχίας
[883] ἰδόντες, ἤδη διήλλαχθε
[885] σὺν σιδάρω.
[886] κάρτα δ' ἀληθῆ πατρὸς Οἰδιπόδα
[887] πότν' Ἐρινὺς ἐπέκρανεν.

Strophe 3

[888] [Χορός]: δι' εὐωνύμων τετυμμένοι,
[889] τετυμμένοι δῆθ', ὁμοσπλάγχων
[890] τε πλευρωμάτων
[891] [Zelee ost]
[892] αἰαῖ δαιμόνιοι,
[893] αἰαῖ δ' ἀντιφόνων θανάτων ἀραί.
[895] διανταῖαν λέγεις δόμοισι καὶ
[896] σώμασιν πεπλαγμένους,

[897] ἀναυδάτῳ μένει
[898] ἀραΐῳ τ' ἐκ πατρὸς
[899] οὐ διχόφρονι πότμῳ.

Antistrophe 3

[900] [Χορός]: διήκει δὲ καὶ πόλιν στόνος,
[901] στένουσι πύργοι, στένει
[902] πέδον φίλανδρον· μένει
[903] κτέανα δ' ἐπιγόνους,
[904] δι' ὧν αἰνομόροις,
[905] δι' ὧν νεῖκος ἔβα θανάτου τέλος.
[907] ἐμοιράσαντο δ' ὀξυκάρδιοι
[908] κτήμαθ', ὥστ' ἴσον λαχεῖν.
[909] διαλλακτῆρι δ' οὐκ
[909b] ἀμεμφεῖα φίλοις,
[910] οὐδ' ἐπίχαρις Ἄρης.

Strophe 4

[911] [Χορός]: σιδαρόπλακτοι μὲν ὧδ' ἔχουσιν,
[912] σιδαρόπλακτοι δὲ τοὺς μένουσι,
[913] τάχ' ἂν τις εἴποι, τίνες;
[914] τάφων πατρῶων λαχαί.
[915] ἀχάεις δόμων μάλ' αὐτούς
[916] προπέμπει δαϊκτῆρ

[917] γόος αὐτόστονος, αὐτοπήμων,
 [918] δαϊόφρων, οὐ φιλογαθῆς,
 [919] ἐτύμως δακρυχέων ἐκ
 [920] φρενός, ἃ κλαιομένας μου
 [921] μινύθει τοῖνδε δυοῖν ἀνάκτοιιν.

Antistrophe 4

[922] [Χορός]: πάρεστι δ' εἰπεῖν ἐπ' ἀθλίοισιν
 [923] ὥς ἐρξάτην πολλὰ μὲν πολίτας,
 [924] ξένων τε πάντων στίχας
 [925] πολυφθόρους ἐν δαί.
 [926] δυσδαίμων σφιν ἃ τεκοῦσα
 [927] πρὸ πασᾶν γυναικῶν
 [928] ὀπόσαι τεκνογόνοι κέκληνται.
 [929] παῖδα τὸν αὐτᾶς πόσιν αὐτὰ
 [930] θεμένα τούσδ' ἔτεχ', οἱ δ' ὦδ'
 [931] ἐτελεύτασαν ὑπ' ἀλλαλλοφόνους
 [932] χερσὶν ὁμοσπόροισιν.

Strophe 5

[933] [Χορός]: ὁμόσποροι δῆτα καὶ πανώλεθροι,
 [934] διατομαῖς οὐ φίλαις,
 [935] ἔριδι μαινομένα,
 [936] νείκεος ἐν τελευτᾷ.

[937] πέπαυται δ' ἔχθος, ἐν δὲ γαίᾳ

[938] ζόα φονορύτῳ

[939] μέμικται· κάρτα δ' εἴς' ὅμαιμοι.

[940] πικρὸς λυτὴρ νεικέων ὁ πόντιος

[941] ξεῖνος ἐκ πυρὸς συθεῖς

[942] θακτὸς σίδαρος· πικρὸς δὲ χρημάτων

[943] κακὸς δατητὰς Ἄρης ἀρὰν πατρώων

[944] τιθεῖς ἀλαθῆ.

Antistrophe 5

[945] [Χορός]: ἔχουσι μοῖραν λαχόντες οἱ μέλαιοι

[946] διοδότων ἀχθέων·

[947] ὑπὸ δὲ σώματι γᾶς

[948] πλοῦτος ἄβυσσος ἔσται.

[949] ἰὼ πολλοῖς ἐπανθίσαντες

[950] πόνοισι γενεάν·

[951] τελευταῖαι δ' ἐπηλάλαξαν

[952] Ἄραϊ τὸν ὄξυν νόμον, τετραμμένον

[953] παντρόπῳ φυγᾶ γένους.

[954] ἔστακε δ' Ἄτας τροπαῖον ἐν πύλαις,

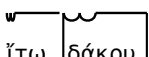
[955] ἐν αἷς ἐθεινόντο, καὶ δυοῖν κρατήσας

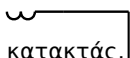
[956] ἔληξε δαίμων.

[957] [Ἰσμήνη]: σὺ δ' ἔθανες κατακτανών.

[958]  δορὶ δ' ἔθανες

[960]  μελεοπαθής.

[962]  ἴτω δάκρυ.

[964]  κατακτάς.

Strophe 6

[966] [Ἀντιγόνη]: ἦέ.

[966b] [Ἰσμήνη]: ἦέ.

[967] [Ἀντιγόνη]: μαίνεται γόοισι φρήν.

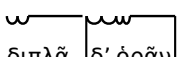
[968] [Ἰσμήνη]: ἐντὸς δὲ καρδία στένει.

[969] [Ἀντιγόνη]: ἰὼ ἰὼ πάνδυρ τεσύ.

[970] [Ἰσμήνη]: σὺ δ' αὖτε καὶ πανάθλιε.

[971] [Ἀντιγόνη]: πρὸς φίλου ἔφθισο.

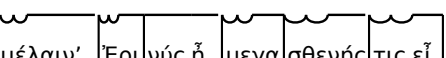
[972] [Ἰσμήνη]: καὶ φίλον ἔκτανες.

[973]  διπλᾶ δ' ὀρᾶν

[975] [Ἀντιγόνη]: ἄχεα τῶνδε τάδ' ἐγγύθεν.

[976] [Ἰσμήνη]: πέλας ἀδελφέ' ἀδελφεῶν.

[977] [Χορός]: ἰὼ Μοῖρα βαρυδότειρα μογερά, πότνιά τ' Οἰδίπου σκιά,

[979]  μέλαιν' Ἑρινύς, ἦ μεγασθενής τις εἴ.

Antistrophe 6

[980] [Ἀντιγόνη]: ἦέ.

[980b] [Ἰσμήνη]: ἦέ.

[981] [Ἀντιγόνη]: δυσθέατα πήματα

[982] [Ἰσμήνη]: ξ̣δει̣ ξ̣εν̣ ἐ̣κ̣ φυ̣γα̣ῶ̣ς̣ ἐ̣μο̣ί̣.

[983] [Ἀντιγόνη]: οὐ̣δ' ἴ̣κε̣θ' ὥ̣ς̣ κα̣τέ̣κ̣ταν̣εν̣.

[984] [Ἰσμήνη]: σω̣θε̣ί̣ς̣ δ̣ε̣ π̣νε̣ῦ̣μ' ἄ̣π̣ώ̣λε̣σεν̣.

[985] [Ἀντιγόνη]: ὥ̣λε̣σε̣ δ̣ῆ̣τ' ἄ̣γα̣ν

[986] [Ἰσμήνη]: καὶ̣ τὸ̣ν ἐ̣νό̣σ̣φ̣ι̣σεν̣.

[987] τά̣λαν̣ πά̣θος̣.

[989] [Ἀντιγόνη]: δύ̣στο̣να κή̣δε' ὁ̣μα̣ί̣μο̣να̣.

[990] [Ἰσμήνη]: δί̣υ̣γρα̣ τρι̣πά̣λ̣των̣ πη̣μά̣των̣.

[991] [Χορός]: ἰ̣ὼ̣ Μο̣ῖ̣ρα̣ βα̣ρυ̣δό̣τ̣ει̣ρα̣ μο̣γε̣ρά̣, πό̣τ̣νι̣ά̣ τ' Οἰ̣δί̣που̣ σ̣κιά̣,

[993] μέ̣λαι̣ν' Ἑ̣ρι̣νύ̣ς, ἧ̣ μέ̣γα̣ σ̣θε̣ν̣ή̣ς̣ τις̣ εἴ̣.

[994] [Ἀντιγόνη]: σὺ̣ τοί̣ νιν̣ οἴ̣σθα̣ δια̣πε̣ρῶ̣ν—

Epode

[995] [Ἰσμήνη]: σὺ̣ δ' οὐ̣ δ̣έν̣ ὕ̣στε̣ρος̣ μα̣θῶ̣ν—

[996] [Ἀντιγόνη]: ἐ̣πε̣ὶ̣ κα̣τ̣ῆ̣λ̣θε̣ς̣ ἐ̣ς̣ πό̣λιν̣,

[997] [Ἰσμήνη]: δο̣ρός̣ γε̣ τῷ̣ δ' ἄ̣ντ̣η̣ ρέ̣τας̣.

[998] [Ἀντιγόνη]: ὁ̣λο̣ᾶ̣ λ̣έ̣γει̣ν̣.

[999] [Ἰσμήνη]: ὁ̣λο̣ᾶ̣ δ' ὁ̣ρᾶ̣ν̣.

[1000] [Ἀντιγόνη]: ἰ̣ὼ̣ π̣ό̣νος̣—

[1001] [Ἰσμήνη]: ἰ̣ὼ̣ κα̣κά̣—

[1002] [Ἀντιγόνη]: δῶ̣μα̣σι̣ καὶ̣ χ̣θονί̣.

[1003] [Ἰσμήνη]: πρὸ̣ πάν̣των̣ δ' ἐ̣μο̣ί̣.

[1004] [Ἀντιγόνη]: καὶ̣ τὸ̣ πρὸ̣σω γ' ἐ̣μο̣ί̣.

[1005] [Ἰσμήνη]: ἰὼ ἰὼ δυστόνων κακῶν, ἄναξ.

[1006] [Ἀντιγόνη]: ἰὼ ἰὼ πάντα πολυπονώτατοι.

[1007] [Ἰσμήνη]: ἰὼ ἰὼ δαιμονῶντες ἄτα.

[1008] [Ἀντιγόνη]: ἰὼ ἰὼ, ποῦ σφε θήσομεν χθονός;

[1009] [Ἰσμήνη]: ἰὼ, ὅπου σ τι τιμῷ τατον.

[1010] [Ἀντιγόνη]: ἰὼ ἰὼ, πῆμα πατρὶ πάρευνον.

[1011] [Κῆρυξ]: δοκοῦν τα καὶ δόξαντ' ἀπαγ γέλλειν με χρῆ

[1012] δήμου προβούλοις τῆσδε Καδμείας πόλεως.

[1013] ἔτεο κλέα μὲν τόνδ' ἐπ' εὐνοίᾳ χθονός

[1014] θάπτειν ἔδοξε γῆς φίλαις κατασκαφαῖς.

[1015] στυγῶν γὰρ ἐχθροὺς θάνατον εἴλετ' ἐν πόλει

[1016] ἱερῶν πατρῶωνδ' ὅσιος ὦν μομφῆς ἄτερ

[1017] τέθνηκεν οὐ περ τοῖς νέοις θνήσκειν καλόν.

[1018] οὕτω μὲν ἅμφὶ τοῦδ' ἐπέσταλται λέγειν.

[1019] τούτου δ' ἀδελφὸν τόνδε Πολυνείκους νεκρὸν

[1020] ἔξω βαλεῖν ἄθαπτον, ἀρπαγὴν κυσίν,

[1021] ὥς ὄντ' ἀναστατῆρκαδμείων χθονός,

[1022] εἰ μὴ θεῶν τις ἐμποδῶν ἔστη δορὶ

[1023] τῷ τοῦδ' ἄγος δὲ καὶ θανῶν κεκτῆσεται

[1024] θεῶν πατρῶων, οὐς ἀτιμάσας ὄδε

[1025] στράτευμ' ἐπακτὸν ἐμβάλων ἥρει πόλιν.

[1026] οὕτω πετηνῶν τόνδ' ὑπ' οἷων ὧν δοκεῖ

[1027] ταφέντ' ἀτίμωστοῦ πιτίμιον λαβεῖν,

- [1028] καὶ μήθ' ὁμαρ|τεῖντυμ|βοχόα|χειρώ|ματα
- [1029] μήτ' ὁ|ξυμόλ|ποιςπροσ|σέβειν|οίμωγ|μασιν,
- [1030] ἄτι|μον εἶ|ναι δ' ἐκ|φορᾶς|φίλων|ὑπο|
- [1031] τοιαῦτ' ἔδο|ξετῶ|δε Καδ|μείων|τέλει.
- [1032] [Αντιγόνη]: ἐγὼ|δὲ Καδ|μείων|γε προ|στάταις|λέγω·
- [1033] ἦν μή|τις ἄλ|λος τόν|δε συν|θάπτειν|θέλη,
- [1034] ἐγὼ|σφε θά|ψω κἀ|νὰ κίν|δυνον|βαλῶ|
- [1035] θάψασ' ἄδελ|φόντων ἐ|μόν, οὐδ' αἰσχύ|νομαι
- [1036] ἔχουσ' ἄπι|στοντήνδ' ἄναρ|χίαν|πόλει.
- [1037] δεινὸν|τὸ κοι|νὸν σπλάγγ|νον, οὗ|πεφύ|καμεν,
- [1038] μητρὸς|ταλαί|νησκά|πὸ δυ|στήνου|πατρός.
- [1039] τοιγὰρ|θέλουσ' ἄκον|τικοι|νώνει|κακῶν|
- [1040] ψυχῇ,|θανόν|τιζῶ|σα συγ|γόνω|φρενί.
- [1041] τούτου|δὲ σάρ|κας οὐ|δὲ κοι|λογά|στορες|
- [1042] λύκοι|σπάσον|ται·μή|δοκη|σάτω|τινί.
- [1043] τάφον|γὰρ αὐ|τῶ καὶ|κατα|σκαφᾶς|ἐγώ,
- [1044] γυνή|περ οὗ|σα, τῶ|δε μη|χανή|σομαι,
- [1045] κόλπῳ|φέρου|σαβυσ|σίνου|πεπλώ|ματος.
- [1046] καύτῃ|καλύ|ψω,μη|δέ τῳ|δόξῃ|πάλιν·
- [1047] θάρσει,|παρέ|σταψη|χανῇ|δραστή|ριος.
- [1048] [Κῆρυξ]: αὐδῶ|πόλιν|σε μὴ|βιά|ζεσθαι|τάδε.
- [1049] [Αντιγόνη]: αὐδῶ|σὲ μὴ|περισ|σᾶκη|ρύσσειν|ἐμοί.
- [1050] [Κῆρυξ]: τραχύς|γε μέν|τοι δῆ|μος ἐκ|φυγῶν|κακά.

[1051] [Ἀντιγόνη]: τράχυν· ἄθαπτοςδ' οὐτος οὐ γενήσεται.

[1052] [Κῆρυξ]: ἀλλ' ὃν πόλις στυγεῖ, σὺ τιμήσεις τάφω, ;

[1053] [Ἀντιγόνη]: ἤδη τὰ τοῦδε διατετίμηται θεοῖς.

[1054] [Κῆρυξ]: οὐ, πρίν γε χώραν τήνδε κινδύνω βαλεῖν.

[1055] [Ἀντιγόνη]: παθῶν κακῶς κακοῖσιν ἄντη μείβετο.

[1056] [Κῆρυξ]: ἀλλ' εἰς ἅπαντας ἄνθ' ἐνὸς τόδ' ἔργον ἦν.

[1057] [Ἀντιγόνη]: ἔρις περαῖνε μῦθον ὁστάτη θεῶν.

[1058] ἐγὼ δὲ θάψω τόνδε· μὴ μακρὴ γόρει.

[1059] [Κῆρυξ]: ἀλλ' αὐτόβουλος ἔσθ', ἅπεν νέπωδ' ἐγώ.

[1059b] [Χορός]: φεῦ φεῦ.

[1060] ὦ μεγάλαυχοι καὶ φθερσιγενεῖς

[1061] Κῆρες Ἑρινύες, αἵ τ' Οἰδιπόδα

[1062] γένος ὠλέσατε πρυμνόθεν οὕτως,

[1063] τί πάθω; τί δὲ δρῶ; τί δὲ μήσωμαι;

[1064] πῶς τολμήσω μήτε σὲ κλαίειν

[1065] μήτε προπέμπειν ἐπὶ τύμβον·

[1066] ἀλλὰ φοβοῦμαι κάπο τρέπομαι

[1067] δεῖμα πολιτῶν.

[1068] σύ γε μὴν πολλῶν πενθητήρων

[1069] τεύξει· κεῖνος δ' ὁ τάλας ἄγοος

[1070] μονόκλαυτον ἔχων θρῆνον ἄδελφῆς

[1071] εἴσιν· τίς ἂν οὖν τὰ πίθοιτο;

[1072] [Ἡμιχόριον Α]: δράτω | τι ^{etwas} πόλις | καὶ μὴ | δράτω |
something

[1073] τοὺς κλαί|οντας | Πολυνεί|κη.

[1074] ἡμεῖς | μὲν ἴμεν | καὶ συν|θάψομεν |

[1075] αἶδε προ|πομποί. | καὶ γὰρ | γενεᾷ |

[1076] κοινὸν | τόδ' ἄχος, | καὶ πόλις | ἄλλως |

[1077] ἄλλοτ' ἐ|παινεῖ | τὰ δίκαι|α.

[1078] [Ἡμιχόριον Β]: ἡμεῖς | δ' ἅμα τῷδ', | ὥσπερ | τε πόλις |

[1079] καὶ τὸ δί|καιον | ξυνεπαι|νεῖ.

[1080] μετὰ γὰρ | μάκαρας | καὶ Διὸς | ἰσχὺν |

[1081] ὅδε Καδ|μείων | ἦρυ|ξεπόλιν |

[1082] μὴ | 'νατρα|πῆναι|μηδ' ἄλ|λοδαπῶ |

[1083] κύματι | φωτῶν |

[1084] κατακλυ|σθῆναι | τὰ μάλι|στα.